सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 19 जून, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 287, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अमेरिका से समझौते को ईरान अपनी जीत क्यों मान रहा है?

आमिर अज़ीमी

अमेरिका के साथ मेमोरेंडम ऑफ़ अंडरस्टैंडिंग (एमओयू) को ईरान का नेतृत्व, पीछे हटने के बजाय प्रतिरोध और जीत का नतीजा बताने की कोशिश कर रहा है। लेकिन लोगों को दलील से सहमत करवाना आसान नहीं है।

देश अभी-अभी एक विनाशकारी युद्ध से गुज़रा है, अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव है और ईरान के अपने समर्थकों का एक हिस्सा महीनों से वॉशिंगटन के साथ किसी भी समझौते का विरोध करता रहा है। इसके अलावा ईरान के भीतर और बाहर भी ऐसे लोग हैं जो इस संकट को कूटनीति का अवसर नहीं, बल्कि शासन परिवर्तन का मौका मानते हैं। इसी राजनीतिक विरोधाभास की ज़मीन पर ईरान अब इस समझौते को जीत के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा है।

संसद अध्यक्ष और वार्ता में अहम भूमिका निभाने वाले मोहम्मद बग़र ग़ालिबाफ़ ने कहा कि ईरान ने 'अंतिम जीत की ओर एक लंबा क़दम बढ़ाया है।' राष्ट्रपति मसूद पेज़ेश्कियान ने एक बड़े परिवर्तन की संभावना के रूप में इस समझौते की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि अगर इसे पूरी तरह लागू किया गया तो यह ईरान की कई समस्याएँ हल कर सकता है और ईरान व मध्य पूर्व में 'एक अलग दुनिया' बना सकता है। ग़ालिबाफ़ की भूमिका अहम है क्योंकि उन्हें पेज़ेश्कियान के उदारवादी खेमे से नहीं माना जाता। उनका सार्वजनिक समर्थन यह दिखाता है कि इस समझौते को इस्लामी गणराज्य की अधिक ताक़तवर संस्थाओं, यहाँ तक कि रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के भीतर भी समर्थन हासिल है।

ईरान का नेतृत्व इस समझौते को जीत के रूप में इसलिए भी पेश कर रहा है, क्योंकि ईरान के तर्क के अनुसार, अमेरिका और इसराइल अपने मुख्य उद्देश्यों को हासिल करने में नाकाम रहे। वे ईरान को आत्मसमर्पण कराने में असफल रहे, इस्लामी गणराज्य को सत्ता से हटाने में नाकाम रहे, सैन्य कार्रवाई से ईरान के परमाणु कार्यक्रम को ख़त्म नहीं कर पाए और हिज़्बुल्लाह से ईरान के रिश्ते नहीं तोड़ पाए। इसके बजाय, ईरान अब भी वार्ता की मेज पर है, लेबनान को शांति समझौते के दायरे में शामिल किया गया है और प्रतिबंधों में राहत पर चर्चा हो रही है। इस आधिकारिक बयान को ईरान के अंदर चुनौती भी दी जा रही है।

संसद की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के उपाध्यक्ष और कट्टरपंथी सांसद ने मसौदा समझौते को ऐसा दस्तावेज़ बताया है जो ईरान को अमेरिका का उपनिवेश बना देगा। उन्होंने वार्ताकारों पर आरोप लगाया कि उन्होंने सर्वोच्च नेता के उस निर्देश की अनदेखी की, जिसमें कहा गया था कि होर्मुज़ स्ट्रेट को शिपिंग के लिए दोबारा न खोला जाए। यह आलोचना व्यवस्था के बाहर से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की निगरानी करने वाली संस्था के भीतर से आई है।

कई महीनों से संसद में कट्टरपंथियों, सरकार-समर्थित मीडिया और सरकार-समर्थक सभाओं में यह तर्क दिया जाता रहा है कि अमेरिका पर भरोसा नहीं किया जा सकता। वे इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि युद्ध शुरू होने से ठीक पहले भी कूटनीति जारी थी और कहते हैं कि ट्रंप प्रशासन ने वार्ता को ढाल बनाया, जबकि अमेरिका और इसराइल सैन्य कार्रवाई की तैयारी कर रहे थे। उनके लिए वॉशिंगटन के साथ कोई भी समझौता तुष्टिकरण जैसा दिखता है। फिर भी अब इनमें से कुछ आवाज़ें धीमी पड़ती दिख रही हैं। यह संकेत हो सकता है कि आगे बढ़ने का फ़ैसला सरकार के सर्वोच्च स्तर से मंज़ूरी पा चुका है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि पूरी एकता है। लेकिन असल में अर्थव्यवस्था ने भी ईरान को मजबूर किया है। युद्ध, प्रतिबंध, शिपिंग पर रोक, तेल बाज़ारों और विदेशी मुद्रा तक सीमित पहुँच, और बहुत ज़्यादा महँगाई ने देश और आम ईरानी जनता को निचोड़कर रख दिया है।

कई परिवारों के लिए सवाल यह नहीं है कि समझौता जीत जैसा लगता है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या इससे दाम घटेंगे और क्या इससे एक और युद्ध का डर कम होगा।

अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा है कि ईरान अगर अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करता है और प्रतिबंधों में ढील दी जाती है तो उसे अरबों डॉलर तक पहुँच मिल सकती है। इससे ईरान समझौते को अमेरिका पर निर्भरता नहीं, बल्कि निवेश और पुनर्निर्माण का रास्ता बताकर पेश कर सकता है।

फिर भी जोखिम साफ़ हैं। शुक्रवार को स्विट्ज़रलैंड में वार्ता शुरू होने की उम्मीद है।

सबसे कठिन मुद्दे, ईरान के संवर्धित यूरेनियम का भविष्य, संवर्धन के स्तर की अनुमति, वेरिफ़िकेशन, प्रतिबंधों में राहत, होर्मुज़ और लेबनान, अब भी बातचीत में तय होने बाकी हैं। इसराइल को लेकर भी अनिश्चितता है।

ईरान के लिए वॉशिंगटन और इसराइल के बीच दिखती यह खटपट उपयोगी है। लेकिन यही बात समझौते को नाजुक भी बनाती है। अगर इसराइल लेबनान में अभियान जारी रखता है तो ईरान पर प्रतिक्रिया देने का दबाव होगा। अगर अमेरिका इसराइल को रोक नहीं पाता तो समझौते में लेबनान के शामिल होने के ईरान के दावे पर स्थिति साफ़ हो जाएगी।

ईरानी नागरिकों की प्रतिक्रिया बताती है कि जीत के आधिकारिक बयान को एक समान रूप से नहीं लिया जा रहा। एक शख़्स ने कहा कि उन्हें एक और इसराइली हमले का बहुत डर था, लेकिन समझौते की ख़बर सुनने के बाद भी उन्हें 'कोई भरोसा' नहीं है और चिंता है कि अगर वार्ता चलती रही तो देश का ठीक से प्रबंधन होगा या नहीं। शासन-विरोधी एक अन्य ईरानी, जो शुरू में अमेरिकी सैन्य कार्रवाई का समर्थन कर रहे थे, ने पूछा कि अगर अमेरिकी हमले से ईरान में राजनीतिक बदलाव नहीं हुआ तो उससे हासिल क्या हुआ है। हमें उम्मीद थी कि शासन बदल जाएगा। लेकिन तकलीफ़, महँगाई और अर्थव्यवस्था को और ज़्यादा नुक़सान के अलावा लोगों को क्या मिला?'

दूसरे कुछ लोगों को सरकार के दृष्टिकोण के प्रति अधिक सहानुभूति थी। एक दर्शक ने ईरान को विजेता बताया और कहा कि युद्ध ने दिखा दिया कि प्रतिबंध 'भीख माँगने' से नहीं, बल्कि ताक़त के इस्तेमाल से हटते हैं। एक दूसरे ने समझौते का स्वागत सतर्कता के साथ करते हुए कहा कि यह अस्थायी है, लेकिन हमें कुछ महीनों की राहत और शांति की ज़रूरत थी।'

शायद यही सबसे यथार्थवादी निष्कर्ष है। इस्लामी गणराज्य समझौते को जीत के रूप में पेश कर रहा है क्योंकि इसे ज़रूरत के रूप में बताना आसान नहीं है। लेकिन कई ईरानियों के लिए इसकी सफलता नारों के बजाए इस बात से मापी जाएगी कि युद्ध रुकता है या नहीं, दाम घटते हैं या नहीं, प्रतिबंधों में राहत मिलती है या नहीं, और क्या नेतृत्व अगले दौर को बिना किसी अप्रत्याशित तनाव के संभाल सकेगा?

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

जंग खत्म, 'डील' पक्की

- तय तारीख से एक दिन पहले हो गया समझौता
- दोनों प्रेसीडेंट ने दस्तखत किए, ट्रम्प चिल्लाकर बोले- डील साइन

तेहरान/वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका और ईरान के बीच जंग खत्म करने के लिए अंतरिम समझौते पर दस्तखत हो गए हैं। डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार रात को फ्रांस के वर्साय पैलेस में इससे जुड़े एमओयू पर साइन किए। इस दौरान फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों मौजूद थे। डील पर दस्तखत करने के बाद ट्रम्प वर्साय पैलेस से बाहर आए। इस दौरान किसी रिपोर्टर ने उनसे पीस डील को लेकर पूछा, तो उन्होंने चिल्लाते हुए कहा, 'डील साइन हो गई है।' ट्रम्प के बाद ईरानी राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने भी ईरान से इलेक्ट्रॉनिक दस्तखत किए।

ईरान ने शर्तें नहीं मानीं तो नाकेबंदी फिर लगेगी

अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा है कि अगर ईरान अमेरिका के साथ हुए समझौते की शर्तों का पालन नहीं करता, तो अमेरिका फिर से सैन्य कार्रवाई शुरू कर सकता है और उस पर कड़ी नौसैनिक नाकेबंदी दोबारा लगा सकता है। नाटो देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक के बाद हेगसेथ ने पत्रकारों से कहा, राष्ट्रपति पहले ही साफ कर चुके हैं कि बातचीत के दौरान अगर ईरान अपने वादे पूरे नहीं करता, तो हम दोबारा कार्रवाई शुरू करने के लिए तैयार रहेंगे।

समझौते के बाद तेल की कीमतों में गिरावट

दुनिया में तेल की कीमत तय करने वाला ब्रेंट क्रूड पिछले तीन दिनों से 80 डॉलर प्रति बैरल से नीचे बना हुआ है। गुरुवार को ब्रेंट क्रूड करीब 2 फीसदी गिरकर 78 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। जंग के दौरान इसकी कीमत 114.44 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थी। यानी अब यह उस स्तर से

करीब 35 डॉलर सस्ता हो चुका है। अमेरिका का कच्चा तेल भी गिरकर करीब 74 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया है, जो तीन महीने का सबसे निचला स्तर है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने बुधवार को इस्लामाबाद में अमेरिका-ईरान समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर मध्यस्थ के तौर पर साइन किए है। अमेरिका और ईरान के बीच बातचीत में पाकिस्तान ने अहम मध्यस्थ की भूमिका निभाई है।

जर्मनी ने लाल सागर में दो जहाज भेजे

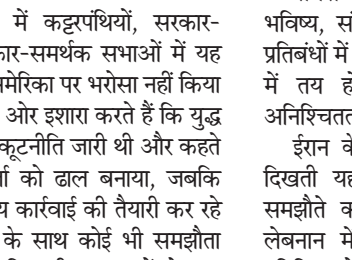

जर्मनी ने होर्मुज स्ट्रेट में संभावित सैन्य मिशन की तैयारी के तहत दो जहाज लाल सागर की ओर भेजे हैं, जो बाद में होर्मुज में बारूदी सुरंगें हटाने के अभियान में मदद करेंगे। यह जानकारी जर्मनी के रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस ने गुरुवार को दी। पिस्टोरियस ने कहा, इस समय हमारा एक माइनस्वीपर (सुरंग हटानेवाला जहाज) और एक सप्लाई जहाज स्वेज नहर पार कर लाल सागर की ओर बढ़ रहे हैं। उन्होंने बताया कि किसी भी माइंस को हटाने के अभियान में शामिल होने के लिए ईरान और ओमान की मंजूरी जरूरी होगी।

ममता बनर्जी को हाई कोर्ट से बड़ा झटका

- बागी गुट के विधायक ऋतब्रत बनर्जी अभी बने रहेंगे नेता विपक्ष

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाई कोर्ट ने फिलहाल बागी टीएमसी विधायक ऋतब्रत बनर्जी को विपक्ष का नेता बनाए जाने के फैसले पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। हाई कोर्ट ने इस मामले में कोई अंतरिम फैसला नहीं दिया है। इसका मतलब है कि फिलहाल ऋतब्रत बनर्जी विपक्ष के नेता बने रहेंगे। लेकिन अदालत ने याचिका स्वीकार कर ली है और मामले की आगे सुनवाई करेगी। बता दें कि टीएमसी एमएलए शोभनदेव ने याचिका दायर की थी।

- **'अब नगर निगम और जिला परिषदों की बारी'** - ऋतब्रत को टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया था लेकिन विधानसभा के स्पीकर ने उन्हें विपक्ष का नेता नियुक्त किया है। ऋतब्रत बनर्जी ने एक इंटरव्यू में कहा, 'एक बार सांसदों-विधायकों का मामला पूरा होने के बाद हम नगर निकायों की ओर बढ़ेंगे, नगर पालिका, नगर निगम, जिला परिषद और कई जिलों के अध्यक्ष भी हमारे संपर्क में हैं।

सुप्रभात

सब कहते हैं ये बीमारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।
सारे बच्चों में खुद्दारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।

सुख दुख बाँट लिया करते थे,
जिससे भी मिल आते थे,
अपनेपन की बहुत उधारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।

कलम किताबें घड़ी डायरी
और विरासत में अपनी,
दो खानों की इक अलमारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।

हँसते गाते खेल रहे हैं,
नाती पोते आँगन में,
अपने पीछे ये फुलवारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।

जबसे लावारिस सन्नो की,
शादी का संकल्प लिया,
खुद करके सारी तैयारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।

खानदान की परम्पराएं,
सदा बनाए रखनी हैं,
बेटों पर ये जिम्मेदारी,
छोड़ गए हैं बाबू जी।

– अंकित चहल

कर्नाटक एमएलसी चुनाव में बीजेपी को लगा बड़ा झटका

- दो विधायकों ने की क्रॉस वोटिंग डीके शिवकुमार ने किया खेल

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक में विधानपरिषद की सात खाली सीटों के चुनावों में क्रॉस वोटिंग सामने आई है। बीजेपी को चुनावों में असहज स्थिति का सामना करना पड़ा है। पार्टी से कुछ समय पहले निष्कासित किए गए दो विधायकों

ने कांग्रेस के कैंडीडेट के समर्थन में वोट दिया। सात सीटों के लिए कुल आठ उम्मीदवार मैदान में है। ऐसे में प्रत्येक उम्मीदवार को जीत के लिए प्रथम वरीयता के 28 वोट चाहिए। कांग्रेस ने पांच कैंडीडेट उतारे हैं। इनमें चार राज्य की सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी ने 5 उम्मीदवार उतारे हैं। इनमें से चार उम्मीदवार (बी के हरिप्रसाद, तिप्पन्ना कामकनूर, पी वी मोहन और शिवन्ना मलवल्ली) विधानसभा में संख्या बल के आधार पर आसानी से जीत दर्ज करने की स्थिति में हैं। पांचवें कैंडीडेट की जीत क्रॉस वोटिंग पर टिकी है। भाजपा के दो उम्मीदवारों (रघु कौटिल्य और लिंगराज पाटिल) की जीत तय मानी जा रही है। असली मुकाबला 7वीं सीट के लिए कांग्रेस के विनय कार्तिक और जद (एस) के गोविंदराजू के बीच है।

राष्ट्रपति बैतूल में 'आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज के सशक्तिकरण' कार्यक्रम को किया संबोधित

विकास और संस्कृति का संतुलन ही सशक्त और समृद्ध समाज की आधारशिला : राष्ट्रपति मुर्मू

भोपाल/बैतूल (नप्र)। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि समाज का सशक्तिकरण केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए। वास्तविक सशक्तिकरण तब होता है जब व्यक्ति में आत्म विश्वास, आत्म सम्मान, जागरूकता और दायित्व बोध का विकास हो। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने कहा कि जनजातीय समाज आत्म सम्मान के साथ जीवन जीने वाला समाज है और उसकी यही विशेषता उसे विशिष्ट

- **जनजातीय समाज की जीवन पद्धति मानवता की मार्गदर्शक**

बनाती है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक जागृति व्यक्ति को अपनी आंतरिक शक्ति का अनुभव कराती है तथा सकारात्मक सोच को जीवन के उच्च आदर्शों से जोड़ती है। उन्होंने कहा कि विकास और संस्कृति का संतुलन ही किसी भी सशक्त और समृद्ध समाज की आधारशिला होता है। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू बैतूल में आयोजित 'आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण' महासम्मेलन को संबोधित कर रही थी। विकास और संस्कृति का संतुलन ही किसी भी सशक्त और समृद्ध समाज की आधारशिला होता है। शाश्वत विकास वही है जो हमारी जड़ों को मजबूत बनाते हुए भविष्य की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करे।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने कहा कि भारत ने वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब देश का प्रत्येक वर्ग विकास की मुख्यधारा से जुड़ जाएंगी। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत सुरक्षित और अक्षुण्ण रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रह्मकुमारी संस्थान द्वारा आयोजित इस प्रकार के सम्मेलन जनजातीय समाज के आध्यात्मिक उत्थान, सामाजिक जागरूकता और समग्र विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने मध्यप्रदेश शासन की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जनजातीय कल्याण के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। उन्होंने विशेष रूप से सिकल सेल एनीमिया का उल्लेख करते हुए कहा कि जनजातीय क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना अधिक पायी जाती है और इसके उन्मूलन के लिए प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं।

आध्यात्मिक जागृति जनजातीय समाज के सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम : राज्यपाल

राज्यपाल ने कहा कि आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक मूल्यों के माध्यम से समाज को उन्नत, संस्कारित एवं सम्मानपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने इस भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन के लिए प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त करते हुए संस्था के सभी भाई-बहनों को शुभकामनाएं दीं।

राष्ट्रपति मुर्मू का जीवन संघर्ष और कर्तव्य निष्ठा का अनुपम उदाहरण : केंद्रीय मंत्री उइके

केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उईके ने कहा कि ओडिशा के एक छोटे से जनजातीय गांव से निकलकर देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंचने वाली राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू भारतीय लोकतंत्र की शक्ति, संविधान की महानता और सामाजिक समरसता की जीवंत मिसाल हैं।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का म.प्र. आगमन, उत्साह-उमंग बढ़ाने वाला होगा : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने कहा है कि राष्ट्पति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का मध्यप्रदेश आगमन हम सबके लिए गर्व का विषय है। प्रदेश की आर्थिक राजधानी और लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की नगरी इंदौर में राष्ट्पति श्रीमती मुर्मु का आत्मीय स्वागत और अभिनंदन है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्पति श्रीमती मुर्मु की इंदौर में अगवानी के बाद मीडिया से चर्चा में यह विचार व्यक्त किए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 19 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भारत-पाक बॉर्डर पर

चाय की थड़ी से हो रही थी साजिश

ऑपरेशन सिंदूर की जासूसी और यूपीआई फंडिंग

● सैन्य ठिकानों को लीक करने का था खेल, जासूस मुस्ताक पर बड़ा खुलासा

जैसलमेर (एजेंसी)। राजस्थान के सीमावर्ती जिले जैसलमेर से गिरफ्तार संदिग्ध पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के एजेंट मुस्ताक अली को लेकर सुरक्षा और जांच एजेंसियों की पूछताछ में बेहद चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। सीआईडी इंटेलीजेंस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों की जांच में यह साफ हो गया है कि भारत-पाकिस्तान सीमा के पास मुस्ताक अली की एक साधारण सी दिखने वाली चाय की थड़ी महज रोजी-रोटी का जरिया नहीं, बल्कि भारतीय सेना और बीएसएफ की जासूसी करने का एक सुनियोजित 'सीक्रेट सेंटर' थी।

चाय की दुकान खोलने का मिला था स्पेशल टास्क- जांच एजेंसियों के अनुसार, पाकिस्तानी हैंडलर्स ने मुस्ताक अली को विशेष रूप से जैसलमेर के नाचना क्षेत्र में बॉर्डर की तरफ जाने वाली मुख्य सड़क पर चाय की दुकान खोलने का टास्क दिया था। यह वह मुख्य रास्ता है जहां से सेना और बीएसएफ के वाहनों और जवानों का लगातार मूवमेंट होता है। मुस्ताक को जिम्मेदारी दी गई थी कि वह चाय बेचने के बहाने सुरक्षा बलों की गतिविधियों, उनके काफिलों के समय और गाड़ियों की संख्या पर नजर रखे। चिंताजनक खुलासा यह भी हुआ है कि यदि समय रहते मुस्ताक को गिरफ्तार नहीं किया जाता, तो पाकिस्तानी हैंडलर्स की योजना इस चाय की दुकान पर सीक्रेट लाइव वीडियो कैमरा इंस्टॉल करने की थी। इसके जरिए सीमा क्षेत्र की सुरक्षा गतिविधियों और सेना के मूवमेंट की लाइव अपडेट सीधे पाकिस्तान में बैठे आकाओं तक पहुंचाई जानी थी।

गूगल ऐप कैम से भेजता था सटीक लोकेशन

मुस्ताक अली पिछले करीब 2 सालों से सीमा पार बैठे पाकिस्तानी हैंडलर्स के लगातार संपर्क में था। वह जासूसी के लिए गूगल ऐप कैम मोबाइल एप्लीकेशन का इस्तेमाल कर रहा था। इस ऐप की खासियत यह है कि इससे खींची गई तस्वीरों और वीडियो के साथ उस जगह के सटीक अक्षांश और देशांतर यानी को-ऑर्डिनेट्स भी दर्ज हो जाते हैं। मुस्ताक इसी तकनीक से सैन्य ठिकानों और सामरिक महत्व की जगहों की तस्वीरें पाकिस्तान भेज रहा था, ताकि किसी भी विपरीत परिस्थिति दौरान टारगेट कर सके।

ऑपरेशन सिंदूर की जासूसी और यूपीआई फंडिंग

जांच में सबसे गंभीर बात यह सामने आई है कि जब भारतीय सेना का महत्वपूर्ण ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था, तब भी मुस्ताक लगातार पाकिस्तानी जासूसों से जुड़ा हुआ था। आशंका जताई जा रही है कि इस दौरान उसने कई बेहद संवेदनशील जानकारियां सीमा पार साझा की थीं। इसके बदले में उसे यूपीआई के माध्यम से 25 से 30 हजार रुपये के संदिग्ध वित्तीय लेन-देन के सबूत भी मिले हैं, जिसकी गहनता से जांच की जा रही है। मुस्ताक के मोबाइल की जांच करने पर पाकिस्तान में सक्रिय दो प्रमुख एजेंट को-ऑर्डिनेटरों खालिद और नजीर अहमद के नंबर मिले हैं। चौंकाने वाला तथ्य यह है कि नजीर अहमद कोई और नहीं बल्कि मुस्ताक का सगा फुफेरा भाई (बुआ का बेटा) है, जिसने मुस्ताक को इस जासूसी के दलदल में धकेला और ट्रेनिंग दी थी। सीआईडी इंटेलीजेंस ने मुस्ताक को नाचना क्षेत्र से गिरफ्तार किया है।

संक्षिप्त समाचार

संतोष चौबे व डॉ. जवाहर कर्नावट को आज कर्मवीर सम्मान

भोपाल। माधवराव सप्रे संग्रहालय, भोपाल द्वारा अपने 43वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, शिक्षाविद्, साहित्यकार एवं विश्वरंग के प्रणेता संतोष चौबे एवं विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र के निदेशक तथा वैश्विक हिंदी पत्रकारिता के अध्येता डॉ. जवाहर कर्नावट को कर्मवीर सम्मान प्रदान किया जाएगा। 19 जून को सुबह 10.30 बजे संग्रहालय में आयोजित समारोह में इतिहास एवं पुरातत्व के अध्येता डॉ. सुभाष अत्रे, संस्कृति मर्मज्ञ श्रीराम तिवारी तथा वरिष्ठ पत्रकार नुरूल हसन 'नूर' भी सम्मानित होंगे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश अभिलेखागार के पूर्व संचालक शंभुदयाल गुरू द्वारा प्रदत्त साहित्य से इतिहास प्रभाग का शुभारंभ भी होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल होंगे तथा अध्यक्षता तुलसी मानस प्रतिष्ठान के कार्याध्यक्ष रघुनंदन शर्मा करेंगे।

20 जून को होगा जल संसाधन क्षेत्रीय स्पोर्ट्स क्लब अध्यक्ष पद का चुनाव

भोपाल। मध्यप्रदेश सिंचाई (जल संसाधन) विभाग क्षेत्रीय स्पोर्ट्स क्लब, भोपाल के क्षेत्रीय अध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिए मतदान 20 जून को होगा। मतदान प्रक्रिया प्रातः 10 से दोपहर 3 बजे तक चलेगी। मतदान समाप्त होते ही मतगणना होगी और परिणामों की घोषणा की जाएगी।

निर्वाचन प्रक्रिया को निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित ढंग से कराने के लिए प्रांतीय उपाध्यक्ष एवं रीवा क्षेत्र के प्रभारी असद खान को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया है। वहीं निशेष गोस्वामी, वीरेन्द्र सोलंकी, उमाकांत वर्मा एवं सौरभ पटेल को पर्यवेक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। अध्यक्ष पद के चुनाव में जल संसाधन विभाग के भोपाल क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी क्लबों के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे। निर्वाचन समिति द्वारा मतदान की सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं। विभाग एवं निर्वाचन समिति ने सभी मतदाताओं से समय पर मतदान केंद्र पहुँचकर प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता निभाने की अपील की है। मतदान केंद्र पर सुरक्षा, अनुशासन एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी जारी किए गए हैं। यह निर्वाचन क्षेत्रीय स्पोर्ट्स क्लब के भविष्य के नेतृत्व के चयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिसके प्रति सदस्यों में उत्साह और रुचि देखी जा रही है।

शिवपुरी के 18 हजार 72 उपभोक्ताओं को मई माह में 17 लाख 52 हजार की छूट

ग्वालियर/शिवपुरी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र के अंतर्गत स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनके मासिक विद्युत बिल में टाइम ऑफ डे (ToD) छूट का लाभ प्रदान किया जा रहा है। इसी क्रम में मई 2026 के दौरान शिवपुरी के कुल 18 हजार 72 उपभोक्ताओं को मई माह में 17 लाख 52 हजार रुपए की रियायत प्रदान की गई है। कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनकी विद्युत खपत के आधार पर टाइम ऑफ डे (ToD) योजना के अंतर्गत यह छूट प्रदान की गई है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री ऋषि गर्ग ने बताया है कि कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटरिंग पहल के अंतर्गत उपभोक्ताओं को सोलर ऑवर में बिजली उपयोग करने पर विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। दिन के टैरिफ में स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जा रही है।

कंपनी ने बताया है कि घरेलू, गैर घरेलू, सार्वजनिक जल कार्य, स्ट्रीट लाइट एवं निम्नदाब औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि को सोलर ऑवर निर्धारित किया गया है। इस अवधि में उपभोग की गई ऊर्जा पर ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर में 20 प्रतिशत तक की छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड/अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को प्रदान की जा रही है।

भक्तों का भरोसा सर्वोपरि...

राम मंदिर में स्वतंत्र सीईओ की हो नियुक्ति

चंदा चोरी पर नृपेंद्र मिश्र ने कह दी बड़ी बात

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट में चढ़ावे और दान में कथित धांधली और फर्जीवाड़े की खबरों और चल रही सीबीआई जांच के बीच राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पूर्व प्रधान सचिव नृपेंद्र मिश्र ने बड़ी सलाह दी है। हालिया घटनाक्रम से दुखी मिश्रा ने बुधवार को सुझाव दिया कि राम मंदिर ट्रस्ट के कामकाज को संभालने के लिए एक स्वतंत्र सीईओ की नियुक्ति की जानी चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इस पद पर किसी पूर्व आईपीएस अधिकारी की नियुक्ति की जानी चाहिए, ताकि मंदिर का प्रबंधन अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो सके। उन्होंने कहा कि इससे राम मंदिर के प्रबंधन को अधिक पेशेवर और पारदर्शी बनाया जा सकता है। एक विशेष इंटरव्यू में नृपेंद्र मिश्र ने कहा कि राम मंदिर में पारदर्शिता और श्रद्धालुओं का भरोसा सर्वोपरि है।

छोटे जिले जैसा है प्रबंधन का कार्य

प्रधानमंत्री के पूर्व प्रधान सचिव मिश्र ने राम मंदिर प्रबंधन की जटिलताओं को फोकस करते हुए बताया कि 71 एकड़ में फैले मंदिर परिसर की गतिविधियां किसी छोटे जिले के बराबर हैं, जहां प्रतिदिन लगभग एक लाख श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। लोगों की जरूरतों को संभालना आसान नहीं।

राम मंदिर सनातन धर्म का अंतरराष्ट्रीय प्रतीक

बता दें की सुप्रीम कोर्ट की व्यवस्था के तहत नृपेंद्र मिश्र को राम मंदिर निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाया गया था। उनकी जिम्मेदारी केवल निर्माण तक ही सीमित है, लेकिन उन्हें मंदिर ट्रस्ट का पदेन सदस्य भी बनाया गया है। ऐसे में उनकी जिम्मेदारी मंदिर निर्माण से आगे अब प्रबंधन और पारदर्शिता में भी है। उन्होंने कहा, यह मंदिर सनातन धर्म का प्रतीक है।

जांच के घेरे में हालिया विवाद

पिछले कुछ समय में भूमि खरीद और दान से जुड़ी शिकायतों पर प्रतिक्रिया देते हुए मिश्र ने बताया कि एक विशेष जांच दल वर्तमान मामलों की जांच कर रहा है और 15 दिनों के भीतर अपनी रिपोर्ट सौंप देगा। उन्होंने कहा कि दो साल पहले भूमि खरीद को लेकर उठे विवाद के बाद पारदर्शिता बरतने की चेतावनी दी गई थी, लेकिन अब सामने आए मुद्दे अधिक गंभीर हैं।

भविष्य में किसी भी विवाद की गुंजाइश न रहे

मिश्र ने इस बात पर जोर दिया कि राज्य और केंद्र सरकार को मंदिर प्रबंधन के इस पेशेवर ढांचे पर जल्द निर्णय लेना चाहिए। उनका यह प्रस्ताव ऐसे समय में आया है जब राम मंदिर न केवल भारत बल्कि वैश्विक स्तर पर करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र बन चुका है। मिश्र ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शासन शैली की भी प्रशंसा की।

इंदौर दौरे पर सीएम का जल, शिक्षा-आईटी पर फोकस

तालाब, स्कूल, आईटी पार्क और धरोहरों का किया निरीक्षण; छात्राओं के साथ खगोलीय लैब भी देखी

इंदौर (नप्र)। सीएम डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को इंदौर दौरे के दौरान शहर में जल संरक्षण, शिक्षा, आईटी विकास और ऐतिहासिक धरोहरों से जुड़े कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। उन्होंने खंडवा रोड स्थित लिंबोदी तालाब पहुंचकर जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत चल रहे जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण कार्यों का निरीक्षण किया, बड़ा गणपति स्थित शासकीय शारदा कन्या स्कूल में छात्राओं से संवाद कर खगोलीय प्रयोगशाला देखी, निर्माणाधीन आईटी पार्क-3 का निरीक्षण कर प्रदेश को आईटी हब बनाने का रोडमैप साझा किया, वीरगढ़ी हनुमान मंदिर की प्राचीन बावड़ी के संरक्षण के निर्देश दिए और किला मैदान पहुंचकर वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में प्राचीन श्री वीरगढ़ी हनुमान मंदिर की गो शाला में गोमाता की पूजा कर गुड़-चारा खिलाया।

लिंबोदी तालाब पर श्रमदान- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने खंडवा रोड स्थित करीब 100 साल पुराने लिंबोदी तालाब के जीर्णोद्धार कार्यों का अवलोकन करते हुए कहा कि जल है तो कल है, जल ही जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण और स्वच्छता दोनों जरूरी हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत प्रदेशभर में अब तक 2 लाख से अधिक जल संरक्षण कार्य किए जा चुके हैं। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि अमृत 2.0 योजना के तहत तालाबों में स्टोन बोल्डर पिचिंग, टो-वॉल, रैलिंग, इको-फ्रेंडली पाथवे और स्टोन बेंच जैसे विकास कार्य किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्माणाधीन आईटी पार्क-3 का निरीक्षण भी किया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश को देश का अग्रणी आईटी और सेवा क्षेत्र का केंद्र बनाने का संकल्प है और उज्जैन-इंदौर मेट्रोपॉलिटन रीजन इसका ग्रोथ इंजन बनेगा।

नीट री एग्जाम

आखिर इतना हंगामा क्यों बरपा है...

2 दिन में 4 नीट स्टूडेंट ने किया सुसाइड

● अब गुजरात का छात्र छठी मंजिल से कूदा ● तमिलनाडु की छात्रा ने लिखा-दोबारा एग्जाम से डर

कोयंबटूर (एजेंसी)। तमिलनाडु के कोयंबटूर में नीट की तैयारी कर रही 19 साल की छात्रा अनुकीर्तना ने बुधवार सुबह जहर खाकर आत्महत्या कर ली। मौत से पहले छात्रा ने अपने चाचा और करीबी रिश्तेदारों को वॉट्सएप मैसेज भेजे थे। मैसेज में उसने लिखा- 'मैंने नीट परीक्षा दी थी और मेडिकल कॉलेज में एडमीशन का इंतजार कर रही थी, लेकिन परीक्षा कैंसिल हो गई। अब दोबारा परीक्षा देने से डर लग रहा है। मेरे पापा ने मुझ पर बहुत पैसा खर्च किया है, मैं अब उनका सामना कैसे करूंगी, नहीं जानती।' वहीं, अहमदाबाद के न्यू रानीप इलाके में बुधवार रात करीब 2.30 बजे 17 साल के छात्र ने आनंदम फ्लैट्स के ब्लॉक बी की छठी मंजिल से छलांग लगा दी। पुलिस जांच में पता चला कि छात्र नीट परीक्षा की तैयारी कर रहा था। आत्महत्या का कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है। पिछले दो दिनों में आत्महत्या का यह चौथा मामला है।

● **कोयंबटूर स्थित घर के कमरे में बेहोश मिली थी छात्रा-** अनुकीर्तना कोयंबटूर के कोवईपुदुर स्थित पार्क टाउन की रहने वाली थी। उसके पिता सेंथिल प्रभु ट्रेड यूनियन के जिला सचिव हैं। दो बेटियों में अनुकीर्तना बड़ी थी। उसने एट्टिमडई के एक प्राइवेट स्कूल से 12वीं तक पढ़ाई की थी। डॉक्टर बनकर गरीबों की मदद करना उसका सपना था। हालांकि, पेपर लीक के कारण नीट परीक्षा रद्द होने और 21 जून को री-एग्जाम की घोषणा से वह गहरे सदमे में आ गई थी। बुधवार सुबह उसने रिश्तेदारों को एक लंबा वॉट्सएप मैसेज भेजा। छात्रा का मैसेज पढ़ने के बाद परिजन उसके घर पहुंचे। कमरे का दरवाजा तोड़ने पर वह बेहोश मिली।

● **परिवार ने केंद्रीय मंत्री का इस्तीफा मांगा-** छात्रा के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया। पोस्टमॉर्टम के बाद परिजन ने छात्रा का शव लेने से इनकार कर दिया। बाद में अधिकारियों के साथ बातचीत के बाद बुधवार रात उन्होंने शव लिया। परिवार ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की है। घटना के बाद डीएमके के जिला समिति सदस्यों ने अस्पताल परिसर में प्रदर्शन किया और नीट पर बैन लगाने की मांग उठाई। इधर पुलिस ने छात्रा का मोबाइल फोन जब्त कर जांच शुरू कर दी है। नीट परीक्षा 3 मई 2026 को देश भर में आयोजित की गई थी।

ग्वालियर शहर एवं ग्वालियर ग्रामीण क्षेत्र के 59 हजार 477 उपभोक्ताओं को, मई माह में 76 लाख 82 हजार की छूट

स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को मिला सोलर ऑवर में 20 प्रतिशत छूट का लाभ

ग्वालियर। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र के अंतर्गत स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनके मासिक विद्युत बिल में टाइम ऑफ डे छूट का लाभ प्रदान किया जा रहा है। इसी क्रम में मई 2026 के दौरान ग्वालियर शहर एवं ग्वालियर ग्रामीण क्षेत्र के कुल 59 हजार 477 उपभोक्ताओं को मई माह में 76 लाख 82 हजार रुपए की रियायत प्रदान की गई है। कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनकी विद्युत खपत के आधार पर टाइम ऑफ डे योजना के अंतर्गत यह छूट प्रदान की गई है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री ऋषि गर्ग ने बताया है कि कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटरिंग पहल के अंतर्गत उपभोक्ताओं को सोलर ऑवर में बिजली उपयोग करने पर विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। दिन के टैरिफ में स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जा रही है।

कंपनी ने बताया है कि घरेलू, गैर घरेलू, सार्वजनिक जल कार्य, स्ट्रीट लाइट एवं निम्नदाब औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि को सोलर ऑवर निर्धारित किया गया है। इस अवधि में उपभोग की गई ऊर्जा पर ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर में 20 प्रतिशत तक की छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड/अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को प्रदान की जा रही है।

प्रबंध संचालक श्री ऋषि गर्ग ने आमजन एवं उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे अपने परिसरों में स्मार्ट मीटर लगाने में सहयोग करें तथा स्मार्ट मीटर के उपयोग से होने वाले लाभों का अधिक से अधिक फायदा उठाएं। उन्होंने कहा कि स्मार्ट मीटर से सटीक रीडिंग, पारदर्शी बिलिंग एवं ऊर्जा खपत की रियल-टाइम मॉनिटरिंग संभव हो रही है। उल्लेखनीय है कि स्मार्ट मीटर से उपभोक्ताओं को बिजली की खपत को ट्रैक करने, ऊर्जा बचत करने तथा मोबाइल एप के माध्यम से कहीं से भी अपनी खपत की जानकारी प्राप्त करने की सुविधा मिलती है। यह प्रणाली ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक सिद्ध हो रही है।

उद्धव की बैठक में नहीं पहुंचे 6 सांसद

● जिसने कभी पलटी नहीं मारी वह भी बना बागी

मुंबई (एजेंसी)। उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) में एक और फूट की खबरों के बीच लोगों का सारा ध्यान पार्टी के नौ सांसदों में से उन छह सांसदों पर केंद्रित हो गया है जिनके अलग होने की आशंका है। गुरुवार को दिल्ली में शिवसेना (यूबीटी) की संसदीय दल की बैठक में ये छह सांसद मौजूद नहीं थे। इनमें संजय जाधव, संजय देशमुख, नागेश पाटिल अष्टिकर, भाऊसाहेब वाकचौरे, संजय दीना पाटिल और ओमराजे निंबालकर शामिल हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों में इन सांसदों ने उद्धव (सांसदों की बगावत बदल देगी शिंदे-फड़नवीस के समीकरण) को भाजपा के खिलाफ अपनी स्थिति मजबूत करने में मदद की थी, जब कई लोगों को उम्मीद थी कि 2022 में शिवसेना में हुए विभाजन के बाद शिवसेना (यूबीटी) को संघर्ष करना पड़ेगा, क्योंकि इससे शिवसेना संगठनात्मक रूप से कमजोर हो गई थी। 56 वर्षीय संजय जाधव परभणी से शिवसेना के तीन बार के यूबीटी सांसद हैं। जाधव पार्टी और ठाकरे परिवार के वफादारों में से एक रहे हैं। जाधव का शिवसेना यूबीटी के लिए एक महत्वपूर्ण झटका इसलिए है, क्योंकि जून 2022 में विभाजन के बाद वह उद्धव के साथ बने रहे।

अधिकारी नहीं मिले तो हाईटेंशन लाइन पर चलने लगा

पोस्ट ऑफिस में नौकरी की बहाली के लिए हरदा से भोपाल आया था युवक

भोपाल (नप्र)। भोपाल के सबसे व्यस्त इलाकों में से एक एमपी नगर में गुरुवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब एक युवक अचानक शासकीय प्रेस के सामने बिजली के खंभे पर चढ़ गया। देखते ही देखते वह हाईटेंशन लाइन के चालू दिखने वाले तारों पर चलने लगा। यह नजारा देखकर नीचे खड़े लोग सकते में आ गए। मौके पर भीड़ जमा हो गई। लोग इसका वीडियो बनाने लगे।

बिजली के पोल पर चढ़े युवक की पहचान हरदा निवासी 42 वर्षीय श्रवण कुमार के रूप में हुई है। श्रवण करीब 5 साल पहले तक हरदा पोस्ट ऑफिस में एक अस्थायी कर्मचारी था। एक क्रिमिनल केस दर्ज होने के बाद उसे नौकरी से हटा दिया गया था, तब से वह लगातार अपनी बहाली की कोशिश कर रहा था। गुरुवार सुबह वह हरदा से भोपाल पहुंचा और एमपी नगर स्थित

पोस्ट ऑफिस गया। सुबह करीब 10:30 बजे उसने सीनियर अधिकारियों से मिलकर नौकरी पर वापस रखने की गुहार लगानी चाही। जब अधिकारियों से मुलाकात नहीं हो पाई तो उसने हताशा में आकर सीधे बिजली के खंभे का रुख कर लिया।

मेंटेनेंस के कारण पहले से बंद थी बिजली

जैसे ही युवक पोल पर चढ़ा, नीचे खड़े लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने आनन-फानन में बिजली कंपनी को फोन लगाया और युवक के नीचे उतरने तक लाइन चालू न करने की हिदायत दी। गनीमत यह रही कि उस समय इलाके में लाइन मेंटेनेंस का काम चल रहा था, जिसके कारण बिजली पहले से ही बंद थी। इसी वजह से युवक की जान बच गई, वरना तारों को छूते ही एक बड़ा और दर्दनाक हादसा हो सकता था।

पुलिस ने मशक्कत के बाद युवक को सुरक्षित उतारा

सूचना मिलते ही एमपी नगर थाना पुलिस तुरंत हरकत में आई। पुलिस ने सबसे पहले नीचे जमा भीड़ को सुरक्षित दूरी पर हटाया ताकि रेस्क्यू में कोई बाधा न आए। इसके बाद पुलिस कर्मियों ने सूझबूझ दिखाई और युवक से बात कर उसे समझाना शुरू किया। करीब 57 मिनट तक चले इस हाई-वोल्टेज ड्रामे और पुलिस की समझाइश के बाद युवक आखिरकार सुरक्षित नीचे उतरने के लिए राजी हो गया। पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर आगे की जांच शुरू कर दी है।

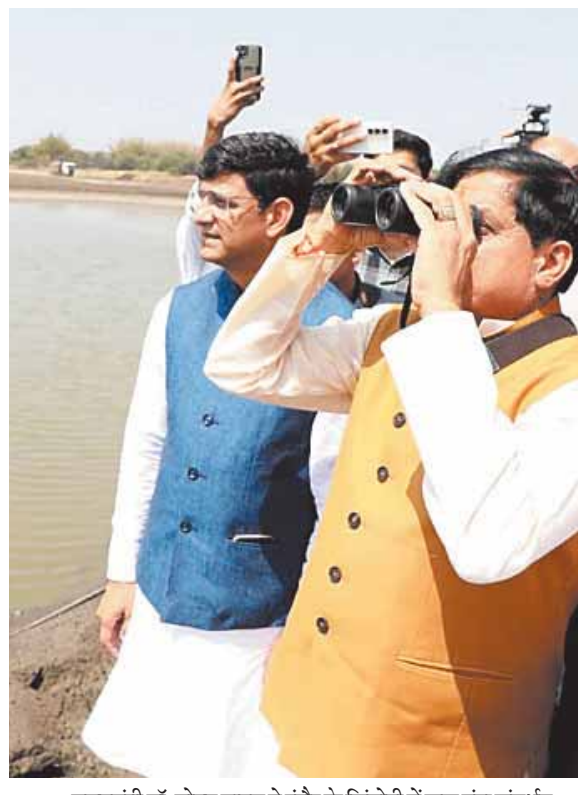

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर के लिंबोदी में जल गंगा संवर्धन अभियान किए गए कार्यों का दूरबीन से अवलोकन किया।

साइप्रस की प्रतिष्ठित सेलास डांस कंपनी की विशेष प्रस्तुति 20 को

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा 20 जून को सायं 7 बजे जनजातीय संग्रहालय, भोपाल में साइप्रस की प्रतिष्ठित नृत्य संस्था 'सेलास डांस कंपनी' की विशेष नृत्य एवं संगीत प्रस्तुति आयोजित की जा रही है। यह कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संवाद और कलात्मक आदान-प्रदान की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

सेलास डांस कंपनी का संचालन सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर एवं शिक्षाविद् मारिया काम्बेरिस के निर्देशन में किया जा रहा है। संस्था समकालीन नृत्य के क्षेत्र में शोधपरक एवं प्रयोगधर्मी कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित है। कार्यक्रम में समकालीन नृत्य और लाइव मौलिक संगीत का अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत किया जाएगा। लगभग 50 मिनट की इस प्रस्तुति में दो स्वतंत्र नृत्य कृतियों को एक सतत कलात्मक प्रवाह में संयोजित किया गया है, जो दर्शकों को एक विशिष्ट और प्रभावशाली सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करेगी।

प्रस्तुति की विषयवस्तु मानव गतियों, स्मृतियों तथा सांस्कृतिक परिदृश्यों के अंतर्संबंधों पर केंद्रित है। यह रचना प्राचीन भूमध्यसागरीय सभ्यता और समकालीन कलात्मक अभिव्यक्ति के मध्य एक सशक्त सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करती है। नृत्य, संगीत और दृश्य सौंदर्य के माध्यम से यह प्रस्तुति विरासत, इतिहास और आधुनिक सृजनशीलता के अद्वितीय संगम को अभिव्यक्त करेगी।

समान नागरिक संहिता नहीं, समान आर्थिक संहिता चाहिए : भाकपा

भोपाल। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने मध्य प्रदेश सरकार द्वारा अनावश्यक रूप से जनता पर थोपी जा रही समान नागरिक संहिता को अनुचित निरुपित करते हुए समान आर्थिक संहिता स्थापित करने की मांग की है।

भाकपा मध्य प्रदेश के राज्य सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने यव बताया कि आर्थिक मोर्चे पर असफल और गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी रोकने में अक्षम मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार जनता को भ्रमित करने और रोजी रोटी के बुनियादी मुद्दों से जनता का ध्यान हटाने की साजिश के तहत समान नागरिक संहिता जनता पर थोपने की तैयारी कर रही है। मध्य प्रदेश में बेरोजगारी की दर बढ़ती जा रही है। इसके बजायसरकार को पहले समान आर्थिक संहिता लागू करके जनता को बेहतर, गुणवत्ता पूर्ण जीवन और सम्मानजनक आर्थिक समानता उपलब्ध करने की योजना तैयार करना चाहिए। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रस्तुत समान नागरिक संहिता का प्रस्ताव विसंगतियों और अंतर्विरोधों से ग्रस्त है । समान नागरिक संहिता जनता पर थोपने काभारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कड़ा करेगी। भाकपा ने इस मुद्दे पर सर्वदलीय बैठक शीघ्र ही बुलाने की मांग मुख्यमंत्री से की है।

भोपाल में कांग्रेस का चरखा सत्याग्रह आंदोलन

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने कहा–ईसीआई रहते ज्ञानेश कुमार कैसे हो सकते हैं राम मंदिर ट्रस्ट के मेंबर

भोपाल (नप्र)। राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन का नामांकन निरस्त होने के विरोध में राजधानी भोपाल के रोशनपुरा चौराहे पर कांग्रेस का लोकतंत्र बचाओ सत्याग्रह जारी है। इस दौरान पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने मीडिया से चर्चा करते हुए अयोध्या राम मंदिर ट्रस्ट और मुख्य चुनाव आयुक्त को लेकर सवाल उठाए हैं।

दिग्विजय सिंह ने कहा कि देशभर के लोगों ने राम मंदिर निर्माण के लिए श्रद्धा से चंदा दिया था। उन्होंने आरोप लगाया कि मंदिर निर्माण और उससे जुड़े मामलों में भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप सामने आए हैं, जिसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। सत्याग्रह स्थल पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चरखा चलाकर सांकेतिक विरोध प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में कांग्रेस की राज्यसभा प्रत्याशी मीनाक्षी नटराजन, कांग्रेस नेता पीसी शर्मा सहित कई वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कांग्रेस को नहीं मिली कहीं से भी राहत

कांग्रेस की राज्यसभा उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन का नामांकन रिटर्निंग अधिकारी ने तेलंगाना में एक न्यायालयीन मामले में तलब किए जाने की जानकारी न दिए जाने पर निरस्त कर दिया था। इसके बाद कांग्रेस ने इस मामले में चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट में अपील की और रिटर्निंग अफसर के फैसले का विरोध किया, लेकिन कहीं से राहत नहीं मिली। इसलिए अब कांग्रेस इस मामले में चरखा चलाकर सत्याग्रह आंदोलन कर रही है।

'नामांकन निरस्त करना लोकतंत्र के खिलाफ'

कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि मीनाक्षी नटराजन का नामांकन निरस्त किया जाना लोकतांत्रिक प्रक्रिया के खिलाफ है। वहीं कार्यक्रम के दौरान चुनाव आयोग और भारतीय जनता पार्टी को लेकर भी कांग्रेस नेताओं ने राजनीतिक हमला बोला।

रोशनपुरा चौराहे पर चल रहे इस सत्याग्रह के माध्यम से कांग्रेस ने चुनावी प्रक्रिया में निष्पक्षता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की मांग उठाई। पार्टी नेताओं का कहना है कि वे इस मुद्दे को लेकर अपना विरोध जारी रखेंगे।

इस विषय पर भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता

उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का उल्लेख करते हुए कहा कि वे अयोध्या राम मंदिर ट्रस्ट के सदस्य भी बताए जाते हैं। सिंह ने सवाल उठाया कि यदि ऐसा है तो मुख्य चुनाव आयुक्त रहते हुए किसी ट्रस्ट की सदस्यता कैसे संभव है। उन्होंने इस विषय पर भी स्पष्टीकरण की आवश्यकता बताई।

विधवा महिला से रेप और ब्लैकमेलिंग

सहकर्मी ने कोल्ड ड्रिंक में नशा मिलाकर पहली बार बनाए थे संबंध, अश्लील फोटो और वीडियो वायरल किए

भोपाल (नप्र)। भोपाल के खजूरी सड़क थाना क्षेत्र में एक विधवा महिला ने अपने सहकर्मी पर नशीला पदार्थ देकर दुष्कर्म करने और चार साल तक धमकी देकर शोषण करने का केस दर्ज कराया है। पुलिस के अनुसार 32 वर्षीय महिला निजी कंपनी में काम करती है और उसके चार बच्चे हैं।

आरोप है कि करीब चार साल पहले सहकर्मी राहुल मालवीय उसे मंदिर घुमाने के बहाने ले गया और कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर बेहोशी की हालत में उसके साथ रेप किया। इसके बाद आरोपी धमकी देकर लगातार उसका शोषण करता रहा।

बच्चे और रिश्तेदारों को भेज दिए वीडियो

कुछ दिन पहले आरोपी ने महिला के अश्लील फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिए और उसके बच्चों व रिश्तेदारों को भी भेज दिए। परेशान होकर महिला ने बुधवार को थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। थाना प्रभारी नीरज वर्मा के मुताबिक आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। आरोपी की तलाश की जा रही है और मामले की जांच जारी है।

आयशर की टक्कर से पेट्रोल पंप कर्मचारी की मौत

नाइट ड्यूटी खत्म कर घर लौट रहा था युवक, दो बच्चों के सिर से उठा पिता का साया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के खजूरी थाना क्षेत्र में गुरुवार सुबह सड़क हादसे में 30 वर्षीय युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान नितेश यादव पुत्र अशोक यादव निवासी आमना खेड़ी के रूप में हुई है। नितेश भैंसा खेड़ी स्थित एक पेट्रोल पंप पर बतौर सेल्समैन काम करता था। बुधवार-गुरुवार की रात ड्यूटी पूरी करने के बाद वह बाइक से अपने घर लौट रहा था।

सुबह करीब 10:15 बजे खजूरी सड़क के पास एक टर्निंग पर सामने से आ रहे आयशर वाहन ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि नितेश ने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

भोपाल में खराब इंजीनियरिंग का एक और नमूना

जिस फुटपाथ पर चलने की जगह, उसे रेलिंग लगाकर बंद कर दिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल में खराब इंजीनियरिंग का एक और नमूना सामने आया है। ऐशबाग में 90 डिग्री ब्रिज के बाद वार्ड 32 के फुटपाथ पर ऐसी कारीगरी हुई कि पैदल चलने वालों के लिए बना फुटपाथ पिंजरे की तरह बंद हो गया। सौंदर्यीकरण के नाम पर सड़क के किनारे 3 फीट ऊंची लोहे की जाली (फेंसिंग) लगा दी गई है। इससे राहगीरों का फुटपाथ पहुंचना नामुमकिन हो गया है।

स्थिति यह है कि फुटपाथ पर जाने और सड़क पर आने के लिए गिने-चुने कट पॉइंट छोड़े गए हैं, लेकिन यहां ठेले वालों ने कब्जा कर रखा है। कई स्थानों पर फुटपाथ के एक तरफ 3 फीट ऊंची लोहे की जाली और दूसरी तरफ पहले से बनी 3 फीट ऊंची पक्की दीवार है। लोगों का कहना है कि सुरक्षा के नाम पर फुटपाथ को आम लोगों के लिए ही अनुपयोगी बना दिया गया है। यह काम पार्षद निधि से कराया जा रहा है।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि जब कोई भी काम जनता की सुविधा के लिए किया जाता है तो धरातल की स्थिति देखे बिना ऐसी डिजाइन कैसे मंजूर हो जाती है। यह सीधे तौर पर पैसे की बर्बादी है। कोई भी बस या सार्वजनिक परिवहन के यात्री सड़क पर उतरकर फुटपाथ पर नहीं आ सकेंगे।

अधिकारी आज मौके पर जाएंगे

इस मामले में निगम के ईई एनके डेहरिया का कहना है कि इंजीनियर से जानकारी मांगी है कि यह काम किस मद से और किस प्रक्रिया के तहत स्वीकृत हुआ। यदि लोगों को फुटपाथ का उपयोग करने में दिक्कत आ रही है तो उसमें बदलाव किया जाएगा। गुरुवार को मैं खुद जाऊंगा।

डिजाइन बदलवा देंगे

पार्षद आरती अनेजा ने कहा कि यहां अतिक्रमण और शराबियों का जमावड़ा रहता है, जिसे रोकने के लिए यह कदम उठाया गया था। ठेकेदार ने भरोसा दिया था कि फुटपाथ पर आसानी से चढ़ा जा सकता है, लेकिन मैंने खुद जाकर स्थिति देखी तो ऐसा बिल्कुल नहीं था।

नाबालिग छात्रा से रेप कर हत्या के दोषियों को उम्रकैद

डीएनए रिपोर्ट के आधार पर 7 साल बाद सजा; मनुआभान टेकरी पर की थी वारदात

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बहुचर्चित मनुआभान टेकरी दुष्कर्म एवं हत्या कांड में विशेष न्यायाधीश कुमुदिनी पटेल की अदालत ने अविनाश साहू और जस्टिन राज को बुधवार को दोषी ठहराते हुए शेष प्राकृतिक जीवन तक सश्रम आजीवन कारावास और 8-8 हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है। वर्ष 2019 में हुई इस वारदात ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया था।

30 अप्रैल 2019 को आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली नाबालिग अपनी 16 वर्षीय बुआ और उसके मित्र अविनाश साहू के साथ मनुआभान टेकरी घूमने गई थी। आरोपियों ने टेकरी पर बालिका के साथ दुष्कर्म करने के बाद पत्थर से सिर कुचलकर उसकी हत्या कर दी थी और शव को करीब 100 फीट गहरी खाई में स्थित गुफा में छिपा दिया था। बाद में दोनों आरोपी बालिका को तलाशने का नाटक करते रहे।

सीबीआई ने दी थी क्लीन चिट

सीबीआई ने पुलिस की डीएनए रिपोर्ट को स्वीकार नहीं करते हुए दोनों आरोपियों को क्लीन चिट देकर क्लोजर रिपोर्ट पेश कर दी थी। हालांकि अदालत ने सीबीआई की क्लोजर रिपोर्ट को अस्वीकार करते हुए उससे स्पष्टीकरण मांगा था। अंततः ट्रायल के बाद अदालत ने दोनों आरोपियों को दोषी मानते हुए शेष जीवन तक जेल में रहने की सजा सुनाई।

पुलिस ने रातभर की थी बालिका की सर्चिंग

बालिका के लापता होने की सूचना मिलने पर कोहेफिजा थाना पुलिस ने रातभर सर्चिंग की, लेकिन सफलता नहीं मिली। पूछताछ के दौरान अविनाश साहू के बयान बदलने पर पुलिस को संदेह हुआ। सख्ती से पूछताछ करने पर उसने वारदात कबूल कर ली, जिसके बाद पुलिस ने खाई से बालिका का खून से लथपथ शव बरामद किया। पुलिस ने पॉक्सो एक्ट और हत्या सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर डीएनए रिपोर्ट, मेडिकल साक्ष्य और गवाहों के आधार पर चालान पेश किया था। बाद में राज्य सरकार ने मामले की सीबीआई जांच की सिफारिश की थी।

पुजारी ने 30 साल पहले कबाड़ी से 50 रुपये में खरीदा था पीतल का बिल्ला

झांसी की रानी से निकला कनेक्शन, अनमोल हो गई कीमत

दतिया (नप्र)। मध्य प्रदेश की धरती अपने भीतर इतिहास के न जाने कितने राज दफन किए हुए है। राज्य में चल रहे 'ज्ञान भारतम मिशन' के तहत पुरातत्वविदों की टीम को एक ऐसी कामयाबी मिली है, जिसने इतिहास के पन्नों को एक नया मोड़ दे दिया है। ताजा खोज बुंदेलखंड के दतिया जिले में रहने वाले 75 वर्षीय पुजारी राधावल्लभ मिश्रा के घर से हुई है, जहां सालों से संदूक में बंद दो नायाब ऐतिहासिक कड़ियां सामने आई हैं।

महारानी विक्टोरिया और भारत के 12 राजा– पुजारी के संग्रह से लगभग 150 से 200 साल पुराना एक दुर्लभ सामूहिक चित्र मिला है। इसे 'पूना फोटोग्राफिक कंपनी' ने तैयार किया था। इस ऐतिहासिक तस्वीर में ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया के इर्द-गिर्द बड़ौदा, मैसूर, इंदौर, ग्वालियर, जयपुर, त्रावणकोर और नागपुर के महाराजाओं के साथ हैदराबाद के निजाम और उनके प्रधानमंत्री नवाब आसमान जाह नजर आ रहे हैं।

हालांकि, वक्त की मार के कारण तस्वीर का निचला हिस्सा टूट चुका है, जिससे दो राजाओं के नाम हमेशा के लिए इतिहास के पन्नों से मिट गए हैं। पुजारी राधावल्लभ ने इस तस्वीर को 50 साल पहले एक फोटो फ्रेम करने वाले की दुकान से तब उठाया था, जब कोई इसे लेने नहीं आया।

झांसी साम्राज्य का सबसे पहला आधिकारिक बैज– पुरातत्व विभाग के वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ. वसीम खान ने बताया कि इस सर्वे के दौरान एक और चौंकाने वाली चीज मिली। यह झांसी के राजमहल के चपरासी की वर्दी पर लगने वाला पीतल का एक आधिकारिक बैज है। इस पर चपरास श्री महाराजाधिराज झांसी संवत् 1896 (1840 ईस्वी) लिखा हुआ है। यह खोज रानी लक्ष्मीबाई से शादी से पहले राजा गंगाधर राव के प्रशासनिक तंत्र की गवाही देने वाला पहला आधिकारिक बैज है।

- मध्य प्रदेश दतिया के 75 वर्षीय पुजारी राधावल्लभ मिश्रा के घर से दो अद्भुत ऐतिहासिक चीजें मिली हैं।
- पहली खोज महारानी विक्टोरिया और भारत के 12 महाराजाओं का एक दुर्लभ कंपोजिट फोटो पोर्ट्रेट है, जिसे विक्टोरिया ग्रुप कहा जाता है।
- दूसरी खोज झांसी साम्राज्य का एक अंडाकार पीतल का बैज है, जिस पर संवत 1896 (1840 ईस्वी) अंकित है।
- पुरातत्वविदों के अनुसार, यह बैज रानी लक्ष्मीबाई से विवाह पूर्व राजा गंगाधर राव के शासनकाल का पहला आधिकारिक प्रमाण है।
- इस दुर्लभ बैज को पुजारी ने करीब 30 साल पहले एक पुरानी बर्तन की दुकान से महज 50 रुपये में खरीदा था।

50 रुपए में खरीदा था दुर्लभ बैज– दिलचस्प बात यह है कि राधावल्लभ मिश्रा ने इसे 30 साल पहले एक पुरानी बर्तन की दुकान से सिर्फ 50 रुपये में खरीदा था। पुरातत्व आयुक्त मदन कुमार नागरगोजे के मुताबिक, ज्ञान भारतम मिशन के तहत लोग खुद आगे आकर अपने पुरखों की इन भूली-बिसरी यादों को सौंप रहे हैं, जो हमारी साझी विरासत को सहेजने में मील का पत्थर साबित होंगी।

संपादकीय

महाराष्ट्र में 'ऑपरेशन टाइगर'!

जैसी की संभावना थी, महाराष्ट्र में शिवसेना के एकनाथ शिंदे और परदे के पीछे से भाजपा का शिवसेना उद्धव के सांसदों को तोड़ने का 'ऑपरेशन टाइगर' सफल हो गया है। कहा जा रहा है कि इसका अगला निशाना मुंबई महानगर पालिका होगी। उद्धव सेना के नेता उद्धव ठाकरे और उनके बड़बोले सहयोगी संजय राऊत की तमाम डींगों के बाद भी उद्धव द्वारा गुरूवार को बुलाई बैठकों में केवल 3 सांसद ही पहुंचे, जो उनके पहले से समर्थक हैं। बाकी 6 सांसदों ने पार्टी द्वारा जारी व्हिप की फिक्र नहीं की और लोक सभाध्यक्ष ओम बिरला से मिलकर अलग गुट के रूप में मान्यता देने का पत्र सौंपा। यूं राजनीतिक हल्कों में पश्चिम बंगाल में टीएमसी के दो फाड़ होने के बाद उद्धव सेना में भी दलबदल की अटकलें तेज हो गई थीं। सांसद संजय राउत ने दावा किया था कि शेष पांच सांसदों ने वर्चुअल माध्यम से या फोन पर बैठक में भाग लिया था। वहीं राउत ने मंगलवार को कहा कि गलत तस्वीर पेश की जा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सभी सांसद पार्टी और उद्धव ठाकरे के साथ मजबूती से खड़े हैं। हालांकि कल उद्धव सेना द्वारा भी स्पीकर को दी गई चिट्ठी में कहा गया था कि वो अलग हुए गुट के बारे में नियमानुसार ही निर्णय लें। इस बीच पार्टी ने अलग होने वाले सांसदों को कारण बताओ नोटिस भेजना भी शुरू कर दिया है तथा जवाब देने के लिए भी कुछ घंटों का ही समय दिया गया है। दूसरी तरफ संजय राउत अभी भी वही बात दोहरा रहे हैं कि जो लोग शिंदे सेना के साथ चले गए हैं, वह असंवैधानिक है, क्योंकि वह शिवसेना (ठाकरे) के चुनाव चिन्ह पर जीते हैं। लेकिन इस पर कोई भी ध्यान दे रहा हो, ऐसा नहीं लगता। ऐसे में खीज मिटाने के लिए उद्धव सेना और उनके बंदे अपने सांसदों को खरीदे जाने के आरोप लगा रहे हैं। इसमें भी मजे की बात है कि जब तीन साल पहले शिंदे गुट के विधायक उद्धव सेना से अलग हुए थे, तब संजय राऊत ने आरोप लगाया था कि जो विधायक बिके, उनमें से प्रत्येक को 50-50 करोड़ दिए गए। लेकिन इस बार उन्होंने आरोप लगाया कि उनके सांसदों को 15-15 करोड़ रू. में खरीदा गया। इसका मतलब तो यह हुआ कि उद्धव सेना के सांसदों का रेट बहुत नीचे गिर गया है। इतना लगभग तय है कि ये 6 सांसद पहले संसद में अलग गुट के रूप में मान्यता देने की मांग करेंगे और इसके तुरंत बाद खुद को एकनाथ शिंदे की शिवसेना में विलीन होने का ऐलान करेंगे। इससे जहां संसद में एकनाथ शिंदे के सांसदों की संख्या 7 से बढ़कर 13 हो जाएगी, वहीं एनडीए की ताकत में भी इजाफा होगा। ये ऑपरेशन टाइगर यहीं नहीं रूका है। बताया जा रहा है कि इसकी अगली मंजिल मुंबई महानगरपालिका है। यह दावा शिंदे सेना के पार्षद किरण लांडगे ने किया है। इसके मुताबिक 20 से ज्यादा उद्धव सेना के पार्षद एकनाथ शिंदे के संपर्क में हैं। 'आपरेशन टाइगर' की नैतिकता हमेशा की तरह सवाल खड़े हो रहे हैं, लेकिन आजकल राजनीति में इसकी चिंता कोई नहीं करता। गौरतलब है कि विगत 10 जून को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे दिल्ली में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिले थे और बताया जाता है कि इसी मुलाकात में ऑपरेशन टाइगर की रूपरेखा तय हुई, जिसे एकनाथ शिंदे और उनके पुत्र श्रीकांत शिंदे ने सफलता से अंजाम दिए। जाहिर है कि इस ऑपरेशन के जरिए एकनाथ शिंदे ने अमित शाह की निगाह में अपने नंबर बढ़वा लिए हैं। उद्धव ठाकरे के पास अब कोसने के अलावा कुछ नहीं बचा है।

यूएनजीए में डॉ. रहमान की जीत का वैश्विक दृष्टिकोण

एक ओर युद्ध, हिंसा, असमानता और विस्थापन की समस्याएँ हैं, तो दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल असमानता और आर्थिक विषमताएँ मानव सभ्यता के समक्ष नए प्रश्न खड़े कर रही हैं। ऐसे संक्रमणकाल में ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो केवल समस्याओं का विश्लेषण न करे। बल्कि विश्व समुदाय को एक साझा दिशा भी प्रदान करे। बांग्लादेश के विदेश मंत्री तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र के अध्यक्ष के रूप में चुने गए डॉ. खलीलुर रहमान का विज़न बिल्कुल स्पष्ट है। उनको कुल 99 वोट मिले और उनके प्रतिद्वंद्वी साइप्रस के एंड्रियास एस. काकौरिस को हरा दिया। दरअसल, डॉ. रहमान का विजन स्टेटमेंट सबसे उपयुक्त लगा। उनकी दृष्टि स्पष्ट लगी।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र के अध्यक्ष डॉ. खलीलुर रहमान होंगे। वह एनालेना बेयरबॉक की जगह अब संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्षता करेंगे। आज का विश्व अनेक जटिल चुनौतियों से घिरा हुआ है। एक ओर युद्ध, हिंसा, असमानता और विस्थापन की समस्याएँ हैं, तो दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल असमानता और आर्थिक विषमताएँ मानव सभ्यता के समक्ष नए प्रश्न खड़े कर रही हैं। ऐसे संक्रमणकाल में ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो केवल समस्याओं का विश्लेषण न करे। बल्कि विश्व समुदाय को एक साझा दिशा भी प्रदान करे। बांग्लादेश के विदेश मंत्री तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र के अध्यक्ष के रूप में चुने गए डॉ. खलीलुर रहमान का विज़न बिल्कुल स्पष्ट है। उनको कुल 99 वोट मिले और उनके प्रतिद्वंद्वी साइप्रस के एंड्रियास एस. काकौरिस को हरा दिया। दरअसल, डॉ. रहमान का विजन स्टेटमेंट सबसे उपयुक्त लगा। उनकी दृष्टि स्पष्ट लगी। उनका मूल मंत्र है विश्वास की पुर्नस्थापना और परिवर्तन का प्रबंधन। एक ऐसा संयुक्त राष्ट्र जो सबके लिए परिणाम दे। यह केवल एक राजनीतिक नारा नहीं। बल्कि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में बहुपक्षीय सहयोग की नई परिकल्पना महसूस होती है।

डॉ. रहमान का विश्वास है कि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का मूल उद्देश्य शांति सुनिश्चित करना था। आज जब विश्व के अनेक क्षेत्र युद्ध, आतंकवाद और राजनीतिक संघर्षों से जूझ रहे हैं। तब शांति को पुनः केंद्र में लाना समय की मांग है। हथियारों की आवाज़ से अधिक महत्व संवाद की आवाज़ को मिलना चाहिए। वे राजनीतिक समाधान, शांतिपूर्ण वार्ता और संघर्ष-निवारण को प्राथमिकता देते हैं। विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं की भागीदारी को वे शांति-स्थापना का महत्वपूर्ण आधार मानते हैं। यह दृष्टिकोण उनकी मानवीय संवेदनशीलता को दर्शाता है। वे जानते हैं कि युद्ध केवल सीमाओं को नहीं तोड़ता। बल्कि परिवारों, समाजों और भविष्य की संभावनाओं को भी नष्ट कर देता है। इसलिए उनका नेतृत्व शक्ति के प्रदर्शन की बजाय संवाद और सहमति के निर्माण पर आधारित है। डॉ. रहमान सतत विकास और समावेशी प्रगति में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। किसी को पीछे न छोड़ना संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का मूल दर्शन है। जिसे उन्होंने अपने कार्यक्रम में विशेषरूप से उल्लिखित किया। वे विशेष रूप से अल्पविकसित देशों, भू-आवेष्ठित देशों, छोटे द्वीपीय देशों तथा आर्थिक रूप से कमजोर राष्ट्रों की समस्याओं को वैश्विक एजेंडा में प्रमुख स्थान देना चाहते हैं। उनकी सोच केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है। वे सामाजिक न्याय, समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ जल और वित्तीय समावेशन को भी विकास का अनिवार्य अंग मानते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें प्रणालियों के विस्तार पर बल देते रहे हैं। उनकी पर्यावरणीय सोच आने वाली पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित है। वे मानते हैं कि पृथ्वी हमारे स्वामित्व की वस्तु नहीं बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक धरोहर है।

डॉ. रहमान मानवाधिकारों, शरणार्थियों और मानवीय सहायता में विश्वास करते हैं। उनके अनुसार मानव गरिमा का सम्मान संयुक्त राष्ट्र की आत्मा कास सम्मान है। बांग्लादेश द्वारा लाखों रोहिंग्या शरणार्थियों को आश्रय प्रदान

करने का अनुभव उनके विचारों को विशेष गहराई प्रदान करता है। वे मानते हैं कि शरणार्थी केवल आँकड़े नहीं होते बल्कि वे अपने सपनों, पीड़ाओं और आशाओं के साथ जीवित मनुष्य हैं। उनकी प्राथमिकताओं में मानवाधिकार संस्थाओं को सशक्त बनाना। मानवीय सहायता को सुरक्षित और प्रभावी बनाना तथा प्रवासियों और शरणार्थियों के अधिकारों की रक्षा करना शामिल है। वे विश्व समुदाय को यह याद दिलाते हैं कि मानवता की परीक्षा संकटग्रस्त लोगों के प्रति हमारे व्यवहार से होती है। उनकी करुणा-प्रधान सोच आधुनिक वैश्विक राजनीति में नैतिकता और संवेदनशीलता का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल क्रांति ने विश्व को अभूतपूर्व अवसर प्रदान किया है किंतु इसके साथ ही नई असमानताएँ, निजता के खतरे और नैतिक प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। डॉ. रहमान का मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का शासन समावेशी होना चाहिए। ताकि विकासशील देशों की आवाज़ भी वैश्विक मानकों के निर्माण में शामिल हो सके। वे डिजिटल विभाजन को समाप्त करने, विज्ञान और नवाचार को सतत विकास लक्ष्यों से जोड़ने तथा युवाओं के लिए नए अवसर सृजित करने पर बल देते हैं। यह दृष्टिकोण उनके दूरदर्शी नेतृत्व को प्रदर्शित करता है। वे भविष्य की तकनीकों का स्वागत करते हैं किंतु मानवीय मूल्यों और सामाजिक न्याय को केंद्र में रखकर।

सबसे अहम बात डॉ. रहमान के विज़न में जो दिखा, वह है संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के सुधार और बहुपक्षवाद की पुनर्स्थापना हो। विश्व में अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की प्रभावशीलता को लेकर प्रश्न उठ रहे हैं। अनेक देशों के बीच विश्वास की कमी बढ़ी है। ऐसी स्थिति में वे पारदर्शिता, जवाबदेही, समावेशिता और सहयोग को संयुक्त राष्ट्र की नई कार्यसंस्कृति का आधार बनाना चाहते हैं। वे महासभा को सदस्य देशों द्वारा संचालित सुधारों का केंद्र बनाना चाहते हैं। उनकी कार्यशैली संवाद, निष्पक्षता और सर्वसम्मति के निर्माण पर आधारित है। वे बड़े और छोटे सभी देशों के साथ समान सम्मान का व्यवहार करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। यह गुण उन्हें एक संतुलित और विश्वसनीय वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करता है।

डॉ. खलीलुर रहमान का जीवन संघर्ष, अध्ययन, सेवा और नेतृत्व का अद्भुत समन्वय है। 1979 में बांग्लादेश की कूटनीतिक सेवा में प्रवेश करने के बाद उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संबंधों और विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

टफ्ट्स विश्वविद्यालय के फ्लेचर स्कूल तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने ज्ञान और अनुभव दोनों को अपने व्यक्तित्व का आधार बनाया। पच्चीस वर्षों तक विभिन्न वरिष्ठ पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने वैश्विक प्रशासन, विकास नीति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग के अनेक आयामों को निकट से दुनिया को समझा है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल एक राजनयिक नहीं बल्कि एक विचारशील विकास-चिंतक भी हैं। उनमें प्रशासनिक दक्षता, बौद्धिक गहराई और मानवीय संवेदनशीलता का दुर्लभ संगम दिखाई देता है। डॉ. खलीलुर रहमान का व्यक्तित्व और उनका विज़न हमें यह विश्वास दिलाता है कि यदि नेतृत्व दूरदर्शी, संवेदनशील और समावेशी हो तो विश्व की जटिलतम चुनौतियों का समाधान भी सामूहिक प्रयासों से संभव है। उनकी संयुक्त राष्ट्र महासभा में हुई जीत निःसंदेह संयुक्त राष्ट्र में एक नई रौनक लाएगी और बहुपक्षवाद को भरपूर मदद मिलेगी। ऐसा विश्वास है. भारत के पड़ोसी देश के रहने वाले डॉ. खलीलुर रहमान संयुक्त राष्ट्र के विस्तार में भारत के लिए सहयोग करें तो निश्चय ही संयुक्त राष्ट्र का विस्तार भी होगा और सयुक्त राष्ट्र को भी मजबूती मिलेगी।

अमेरिकी मित्रता में डूबते भारतीय भरोसे के जहाज

सामयिक

विवेक मिश्रा

अमेरिका के प्रति भारत की शिखरस्थ सहिष्णुता, एक राष्ट्र के रूप में हमारे स्वाभिमानी स्वायत्तता के सिद्धांतों को चुनौती दे रही है। प्लाऊ के झंडे तले परिचालन करने वाले वाणिज्यिक जहाज पर अमेरिकी नौसेना का हमला हुआ, जिसके चालक दल में सवार तीन भारतीय नाविकों की मौत हुई। साल की शुरुआत में रूस के झंडे तले चलने वाले 'बेला वन' नामक जहाज पर अमेरिकी नौसेना ने अपने हेलीकॉप्टर उतार जब्तीकरण की कार्यवाही की थी। आरोप था, रूस का यह जहाज वेनेजुएला के प्रतिबंधित तेल को ले जा रहा था। इस जहाज और चालक दल पर गोलीबारी कर हिंसक कार्यवाही नहीं की गई थी। बल्कि कैप्टन को छोड़ बाकी सभी चालक दल के सदस्यों की सुरक्षित वापसी अमेरिका ने सुनिश्चित की। रूसी झंडे की महत्ता ने, न केवल सैन्य मुठभेड़ को दरकिनार किया बल्कि चालक दलों को भी सुरक्षित रखा । हालांकि जब्तीकरण के इस वाकये ने रूस की अंतरराष्ट्रीय छवि को धूमिल किया था। इस घटना के बाद समुद्री जलमार्गों में शैडो फ्लीट या गुप्त जहाजी बेड़ों की आवाजाही भारी मात्रा में बढ़ी है। दरअसल प्रत्यक्ष विवादों व प्रतिबंधों से बचने के लिए और कम लागत, सस्ते शुल्क तथा शिथिल नियमों का लाभ उठाने के लिए विश्व के कई देश समुद्री आवागमन के लिये सुविधाजनक राष्ट्र ध्वजों का वरण करते हैं। व्यापारिक दृष्टि से अपनाई गई यह सुविधा, जहाजों पर तैनात चालक दलों की दुविधा का बड़ा कारण बनती है और अब यह उनके जीवन को भी लील रही है। युद्ध और तनावपूर्ण स्थितियों में लिप्त पक्षों के सरलतम मारक लक्ष्यों में यह गुप्त जहाज बेड़े होते हैं। चूंकि बड़ी आर्थिक शक्तियां जो अक्सर ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था को अपनाती है, वृहद हितों व प्रतिष्ठा को ऊपर रखते हुए, सीधे संघर्ष और उत्तरदायित्व से बचना पसंद करती है। जबकि युद्धरत पक्षों के लिए ऐसे हमले विश्वस्तर पर सैन्य प्रवीणता सिद्ध करने का जरिया बनते है।

भारतीय जीवन निधि पर किए गए अमेरिकी सैन्य हमलों के बाद भारत सरकार की प्रतिक्रिया कूटनीतिक प्रोटोकॉल आधारित रही, जिसमें कार्यवाहक राजदूत जैसन मिक्स को दो बार तलब कर कड़ी निंदा की गई। संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून के अनुच्छेद 38 के अनुसार, सभी जहाजों और विमानों को ट्रांजिट पैसेज का अधिकार है, अनुच्छेद 17 के अनुसार, सभी विदेशी जहाजों को किसी भी देश के जलक्षेत्र में आवाजाही का अधिकार है, ऐसे में ग़ैर-युद्धरत जहाजों को निशाना बनाना पूर्णतः अवैध है। इसके खिलाफ हमें अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर को तलब कर, सख्ती से माफी व मुआवजे की मांग रखना चाहिए। आवश्यकता अनुसार हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में भी इस मुद्दे को उठाया जाना चाहिए।

फारस की खाड़ी और होर्मुज में अमेरिका के द्वारा खड़ी की गई नाकाबंदी के बाद से शैडो फ्लीट समेत लगभग 200 वाणिज्यिक जहाजों को गुप्त रूप से रास्ता देने का दावा खुद ट्रंप कर रहे थे। यही नहीं अमेरिका ने जहाजों के गोपनीय परिवहन के लिए AIS ट्रांसपोंडर ऑफ (लोकेशन बंद) करने की तकनीक और ओमान के तटीय क्षेत्र से गुजरने के मार्ग भी सुझाए। अब जो जहाज इस माहौल में परिवहन संचालन करते हो, उन्हें अचानक निशाने पर लेना स्पष्ट करता है कि अमेरिका समुद्री परिवहन में भी वही भ्रम की स्थितियां पैदा कर रहा है, जो भारत के रूस से तेल खरीदने पर करता है। तेल की वैश्विक आपूर्ति सुचारू बनाए रखने के लिए युद्धकाल में रूसी तेल क्रय को प्रोत्साहित करना और निज हित सधते ही, वही रूस का तेल खरीदने पर टैरिफ थोपना। आज भारत को आवश्यकता है कि इस अमेरिकी पटकथा का यथोचित रहस्योद्घाटन करे, भारतीय विदेशमंत्री विश्वपटल पर इसका मुखर उल्लेख तो करते हैं, लेकिन नायक की तरह इस पटकथा का अंत नहीं कर पा रहे हैं। वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए अमेरिका आधारित नीतियों पर निर्भरता को खत्म कर के ही , हम राष्ट्रीय गौरव व नागरिक सम्मान को बनाए रख सकेंगे ।

हमें, अमेरिका को सहयोगी व साझेदार के रूप में देखने के फितूर से बाहर निकलना होगा, इस बात की प्रतीक्षा भी निरर्थक ही है कि, अमेरिकी नेतृत्व के बदलने से समीकरणों में कुछ विशेष अंतर आएगा। अमेरिकी उप विदेश मंत्री के बयाँ से यह स्पष्ट होता है, जो कहते है- 'हम समझौतों को लेकर भारत के साथ वह गलती नहीं करेंगे जो 20 साल पहले चीन के साथ की थी।' उनकी यह बात चीन को दी गई तकनीकी सहायता और बाजारों तक उन्नत पहुंच को लेकर थी, जिसने चीन को आज अमेरिका के समकक्ष खड़ा कर दिया है। अमेरिकी टैरिफ हो या हार्मूज की नाकेबंदी, चीन ने सीना तान अमेरिकी को चुनौती पेश की है। टैरिफ के बदले टैरिफ, दुर्लभ खनिज के निर्यात पर प्रतिबंध, ताइवान पर सीधे चेतावनी और ईरान से पाकिस्तान के रास्ते निरंतर तेल आयात, यह सभी वो कदम हैं जो अमेरिकी साम्राज्य को स्पष्ट चुनौती देते हैं। पर क्या चीन आज इस मजबूत स्थिति में एकाएक पहुंचा है ? 1980 से 1990 के दशक में जब चीन अपनी विकास यात्रा को गढ़ रहा था,तब चीनी सर्वोच्च नेता 'डेंग शियाओपिंग' ने 'ताओगुआंग यांगहुई (अपनी ताकत छुपाओ, सही समय का इंतजार करो)' के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जिसके तहत चीन ने अंतर्राष्ट्रीय विवादों में अमेरिका को सीधे चुनौती न देकर, ऊर्जा जरूरतों और अर्थव्यवस्था पर केंद्रित विकास को प्राथमिकता दी। इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण तब देखने को मिला जब सन् 1999 में कोसोवो युद्ध के दौरान अमेरिका ने यूगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में स्थित चीनी दूतावास पर हमला किया, जिसमें 3 चीनी पत्रकार मारे गए और बीसियों चीनी घायल हुए। इसके बाद चीन में भारी जनआक्रोश फैला, अमेरिकी दूतावास पर पथराव हुए, चीनी सेना भी तुरंत जवाबी कार्यवाही करना चाहती थी, लेकिन राष्ट्रपति जियांग जेमिन ने सैन्य टकराव के बजाए अमेरिका से औपचारिक माफी और मुआवजे की मांग की और मामले को शांत कर दिया। चीन यह समझता था कि उस दौर में अमेरिका से सीधा संघर्ष उसकी अर्थव्यवस्था और विकास लक्ष्यों को आहत करेगा, फलस्वरूप उसने भी सहिष्णुता के उन रास्तों को अपनाया, जो आज भारत अपना रहा है। भारत के लिए यह चुनौती दोहरी हो जाती है, अमेरिका और चीन दोनों भारत को तीसरी महाशक्ति बनने से रोकना चाहते हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की अगुवाई में आज भारत अतुलनीय कार्य कर रहा है, कई सामरिक महत्व की निर्माण योजनाएं कार्य कर रही हैं, अंतरिक्ष में भारत की मौजूदगी बड़ी है, ऐसे दौर में अमेरिका से सीधा संघर्ष कई मोर्चों पर भारत को नुकसान पहुंचा सकता है।

यद्यपि पारंपरिक रूप से भारत में मानव जीवन की महत्ता को सर्वोपरि माना गया है, तदर्थ हम भौतिक व्यापारिक हितों को पुष्ट करने के लिए अमेरिकी तुष्टिकरण की नीति पर पूर्णतः नहीं चल सकते हैं । राष्ट्र प्रथम की भारत नीति और भारतीयों की जीवन निधि को सार्वभौमिक मंच पर हमें प्रधानता के साथ आलोकित करना होगा। भारत सरकार भले तटस्थ रुख को अपनाए रखे लेकिन राष्ट्रवाद के उदात्त चरित्रों को, आनुषंगिक संगठनों को, छात्रों व स्वयंसेवकों को, हम भारतवासियों को, अमेरिकी राहों के आड़े आने दे, उनके चहेते दूतों के कानों में हमारे मृत भाइयों के विरह से उठे करुण कष्ट के कुछ स्वर पहुंचने दे, भारत स्थित उनके घर के कुछ बर्तन खड़काने का लोकतांत्रिक अवसर दे। यदि ऐसा होता है, तो यह भारत व भारतवासियों का अमेरिकी नेतृत्व को सबसे मुखर और प्रखर प्रत्युत्तर होगा । जिसमें एक तरफ तो वह प्रधानमंत्री मोदी को अपना परम मित्र व प्रमुख साझेदार बताते हैं, लेकिन भारत के खिलाफ टैरिफ और भारतवासियों के विरुद्ध हथियार उठाते हैं। भारतीय जनमानस को स्वसीमित हितों से ऊपर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एकस्वर आव्हान करना होगा। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हमारी सांस्कृतिक सीख को हमें चरितार्थ करना होगा, संपूर्ण जगत जिसे हम परिवार मानते है उसे युद्धस्थ अराजकता के अंध से सहोदय के विश्व बंधुत्व में ज्योतिर्मय करना होगा।

फीस के पैसे नहीं थे तो क्या करती

शिक्षा बनाम व्यवसाय

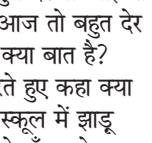

प्रतिभा मिश्रा
सेवानिवृत्त प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय

काम वाली बाई आज बहुत देर से आई तो मैं नाराज़गी से बोली आज तो बहुत देर कर दी तुमने आने में क्या बात है?

उसने एक ठंडी आह भरते हुए कहा क्या करूँ मेडम एक प्राइवेट स्कूल में झाड़ू पोंछा और छोटे बच्चों को सँभालने काम मिल गया है,मुझे सुबह सुबह जल्दी जाना पड़ता है फिर एक घंटे का समय मिलता है तो भागती हुई आपके यहाँ आई हूँ। फिर जिनका स्कूल है उनके बंगले की साफ़ सफ़ाई भी करनी पड़ती है ।

मैंने पूछा कितना पैसा देंगे वो तुमको?

उसके मुँह पर एक फीकी सी मुस्कान तैर गयी बोली पैसे तो नहीं मगर मेरी बच्ची का वहाँ दाखिला हो जाएगा और मुझे फ़ीस नहीं देनी पड़ेगी उसकी। क्या करती मेडम उसे तो पढ़ाना है,फ़ीस कहाँ से देती इसीलिए ये काम मंजूर कर लिया।

वो ये कह कर काम करने लगी और उसकी इस बात ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि आज शिक्षा की हालत क्या हो चुकी है। सरकारी स्कूलों की ख़स्ता हालत और कुकुरमुत्तों की तरह उगते प्राइवेट स्कूल जहाँ पर मोटी फ़ीस, यूनिफ़ॉर्म, पाठ्यपुस्तकों,स्टेशनरी सब का व्यवसाय होता है,सिर्फ़ ज्ञान को छोड़कर। बड़ी-बड़ी इमारतें,ऊपरी दिखावटी व्यवस्थाएँ,सजे धजे क्लासरूम उस मॉल की तरह दिखाई देते हैं जहाँ जाने के लिए जेब भरी हुई होनी चाहिये। ग़रीब आदमी को अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए कितनी मशक्क़त करनी पड़ती है।

अगर हम अपने अतीत की ओर पलट कर देखें तो शिक्षा एक सेवा और साधना हुआ करती थी। और यही शिक्षा वर्तमान में एक उत्पाद और व्यवसाय बन चुकी है,जहाँ सतही और खोखले ज्ञान के अलावा कुछ भी नहीं परोसा जा रहा है। उस पर शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम सोने पर सुहागा का काम करते हैं। मगर पालकों को ये समझने की जिज्ञासा ही नहीं होती है कि उनका बच्चा कितना जानता है। हर बच्चा अस्सी प्रतिशत से कम तो ला ही नहीं रहा है। शिक्षा मोटी कमाई का ज़रिया बन चुकी है, जिसका उदाहरण स्कूल की बसों, मालिकों की बड़ी बड़ी गाड़ियों तथा लाइफ़स्टाइल देख कर लगाया जा सकता है।

मेरी काम वाली बाई को स्कूल, घर और बच्चों की देखभाल के बदले बेटी की शिक्षा मुफ्त में दी जा रही है। तथा प्रचार प्रसार भी यही किया जायेगा। उसके पीछे की वसूली,उसकी मेहनत और अतिरिक्त परिश्रम को नज़रअंदाज़ कर दिया जाएगा और शोषण भी दया में बदल जायेगा।

संस्थाओं का नज़रिया भी छात्रों के लिए एक ग्राहक जैसा हो गया है। जितने ज़्यादा दाख़िले उतना ज़्यादा मुनाफा। इस व्यवसायिक होड़ के कारण मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक ज़िम्मेदारियों जैसे विषय पाठ्यक्रम से ग़ायब होते जा रहे हैं।

शिक्षा में समानता का अधिकार केवल कागज़ों पर रह गया है। अमीर और ग़रीब के बीच की खाई और चौड़ी होती जा रही है। समाज को संवेदनशील नागरिक नहीं बल्कि सिर्फ़ पैसा कमाने वाली मशीन मिल रही है। सरकार और निजी संस्थाओं द्वारा फ़ीस की सीमा तय की जानी चाहिये तथा निजीकरण पर कड़ा नियंत्रण होना चाहिये ताकि सभी को शिक्षा के समान अवसर मिल सकें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अमृत जैसा है बीच में घुसने का सुख

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल
लेखक व्यंग्यकार हैं।

किसी भी गरिमामय कार्यक्रम की मर्यादा का 'बंटाधार' करने में इन्हें महारत हासिल होती है। जब श्रोता मुख्य वक्ता के विचारों में डूबे होते हैं, तभी इन महाशय का पदार्पण होता है। ये 'बिन बुलाए मेहमान, और मंच पर ही सम्मान' वाली मुद्रा में होते हैं। इनका मानना है कि 'देर से आना' बड़े होने की पहली शर्त है। ये ऐसे चलते हैं जैसे हॉल की जमीन नहीं, बल्कि आयोजकों की छाती पर पैर रख रहे हों। इनके जूतों की चरमराहट यह घोषणा कर देती है कि असली 'तीर्थ' अब शुरू हुआ है।

भारतीय जनतंत्र में 'घुसपैठ' केवल सीमाओं पर नहीं होती, बल्कि हमारे साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजनों की आत्मा में बसी है। कुछ विलक्षण प्रतिभाएं तो पैदा ही 'बीच में घुसने' के लिए होती हैं। इनका मूल मंत्र है 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ घुसे स्वयंभू कवि।'

किसी भी गरिमामय कार्यक्रम की मर्यादा का 'बंटाधार' करने में इन्हें महारत हासिल होती है। जब श्रोता मुख्य वक्ता के विचारों में डूबे होते हैं, तभी इन महाशय का पदार्पण होता है। ये 'बिन बुलाए मेहमान, और मंच पर ही सम्मान' वाली मुद्रा में होते हैं। इनका मानना है कि 'देर से आना' बड़े होने की पहली शर्त है। ये ऐसे चलते हैं जैसे हॉल की जमीन नहीं, बल्कि आयोजकों की छाती पर पैर रख रहे हों। इनके जूतों की चरमराहट यह घोषणा कर देती है कि असली 'तीर्थ' अब शुरू हुआ है।

इनका सबसे प्रिय शस्त्र है 'माइक'। माइक देखते ही इनके भीतर का सुषुप्त साहित्यकार अंगड़ाइयां लेने लगता है। संचालन कर रहे बेचारे उद्घोषक के हाथ से ये माइक ऐसे छीनते हैं, जैसे कोई 'अंधी पीसे कुत्ता खाए' वाली स्थिति हो। इसके बाद शुरू होती है 'भूमिका'। यह भूमिका इतनी लंबी होती है कि मुख्य विषय कहीं कोने में बैठकर अपनी बारी का इंतजार करते-करते सो जाता है। वे कहेंगे, मैं बोलना तो नहीं चाहता था, पर आयोजकों का प्रेम...और फिर अगले बीस मिनट तक वे यह बताते हैं कि वे क्या-क्या नहीं बोलना चाहते थे। 'थोथा चना बाजे घना' की तर्ज पर इनका भाषण श्रोताओं के धैर्य की खाल खींचने लगता है।

लेकिन इस 'बीच में घुसने के सुख' का असली रसास्वादन तो फोटो सेशन के समय होता है। किवदंती है कि पुराने जमाने में देवता आकाश से पुष्प वर्षा करते थे, पर आधुनिक युग के ये (साहित्यिक देवता) फ़ोटो के फ्रेम में वर्षा करते हैं। विशेषकर तब, जब मंच पर महिलाओं का समूह मौजूद हो। जैसे ही फोटोग्राफर 'स्माइल प्लीज' कहता है, ये महाशय 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' बनते हुए महिलाओं की कतार को चीरकर ठीक बीच में अवतरित होते हैं। वे ऐसे पोज देते हैं जैसे ग्रुप फोटो के असली 'दूल्हे' वही हों और बाकी सब महज 'बाराती'।

इनका चेहरा उस वक्त 'घी के दिए जलाने' जैसा चमक रहा होता है। उन्हें लगता है कि अगर वे बीच में न घुसे, तो फोटो की गरिमा गिर जाएगी। वे जानते हैं कि 'सांप मरे न लाठी टूटे' वाली चतुराई से कैसे महिलाओं के बीच अपनी जगह बनानी है ताकि सोशल मीडिया पर उनकी 'लोकप्रियता' का झंडा गड़ा रहे।

अंततः, बीच में घुसने का यह सुख वह अमृत है, जिसे पीकर ये जीव खुद को अमर मानते हैं। बेचारा दर्शक तो बस यही सोचता रह जाता है कि 'नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली' वाली बात यहाँ कब चरितार्थ होगी। आखिर इनका और माइक का 'चोली-दामन का साथ' जो ठहरा!

आधी आबादी की बड़ी चुनौती मेनोपॉज़

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में हर वर्ष करोड़ों महिलाएं मेनोपॉज़ की अवस्था में प्रवेश करती हैं। अनुमान है कि वर्ष 2030 तक विश्व में लगभग 1.2 अरब महिलाएं पोस्ट-मेनोपॉज़ अवस्था में होंगी। यह संख्या केवल एक जनसांख्यिकीय तथ्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक चुनौती का संकेत है। भारत में भी महिलाओं की औसत आयु बढ़ने के कारण जीवन का लगभग एक-तिहाई हिस्सा मेनोपॉज़ के बाद बीत रहा है। इसके बावजूद हमारी स्वास्थ्य नीतियों, सार्वजनिक चर्चाओं और मीडिया विमर्श में इस विषय की उपस्थिति लगभग नगण्य है।

मुद्दा

सोनाली सिंह

सहायक प्राध्यापक, आईटीएम विवि ग्वालियर

भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य पर चर्चा अक्सर मातृत्व, कुपोषण, एनीमिया और प्रजनन स्वास्थ्य तक सीमित रह जाती है। लेकिन महिलाओं के जीवन का एक ऐसा चरण भी है, जो लगभग हर महिला के जीवन में आता है, फिर भी वह सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा नहीं बन पाता। यह चरण है- मेनोपॉज़। विडंबना यह है कि जिस विषय से देश की आधी आबादी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है, उसके बारे में जानकारी, संवाद और संवेदनशीलता का गंभीर अभाव दिखाई देता है। परिणामस्वरूप लाखों महिलाएं अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण दौर को समझने के बजाय चुपचाप सहने के लिए विवश रहती हैं।

मेनोपॉज़ को सामान्यतः मासिक धर्म के स्थायी रूप से बंद हो जाने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। चिकित्सकीय दृष्टि से यह सही है, लेकिन सामाजिक और मानवीय दृष्टि से यह परिभाषा अधूरी है। दरअसल, मेनोपॉज़ केवल एक जैविक परिवर्तन नहीं, बल्कि महिला के जीवन में आने वाला एक बहुआयामी बदलाव है, जिसका प्रभाव उसके शरीर, मन, सामाजिक संबंधों, कार्यक्षमता और आत्मविश्वास तक पड़ता है। यही कारण है कि विकसित देशों में अब इसे केवल स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि 'क्वालिटी ऑफ लाइफ' यानी जीवन की गुणवत्ता से जुड़े विषय के रूप में देखा जाने लगा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में हर वर्ष करोड़ों महिलाएं मेनोपॉज़ की अवस्था में प्रवेश करती हैं। अनुमान है कि वर्ष 2030 तक विश्व में लगभग 1.2 अरब महिलाएं पोस्ट-मेनोपॉज़ अवस्था में होंगी। यह संख्या केवल एक जनसांख्यिकीय तथ्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक चुनौती का संकेत है। भारत में भी महिलाओं की औसत आयु बढ़ने के कारण जीवन का लगभग एक-तिहाई हिस्सा मेनोपॉज़ के बाद बीत रहा है। इसके बावजूद हमारी स्वास्थ्य नीतियों, सार्वजनिक चर्चाओं और मीडिया विमर्श में इस विषय की उपस्थिति लगभग नगण्य है।

समस्या की जड़ केवल जानकारी का अभाव नहीं है, बल्कि वह सामाजिक संरचना भी है जिसमें महिलाओं का स्वास्थ्य हमेशा प्राथमिकता नहीं बन पाता। भारतीय परिवारों में अक्सर महिला को देखभाल करने वाली की भूमिका में देखा जाता है, देखभाल पाने वाली की नहीं। वह बच्चों, पति, माता-पिता और परिवार की जरूरतों का ध्यान रखती है, लेकिन अपनी शारीरिक और मानसिक परेशानियों को अक्सर पीछे छोड़ देती है। मेनोपॉज़ के दौरान भी यही स्थिति देखने को मिलती है। गर्मी के तीव्र झोंके, अनिद्रा, मानसिक तनाव, मूड में बदलाव, अवसाद, जोड़ों का दर्द और हड्डियों की कमजोरी जैसे लक्षणों को महिलाएं अपनी नियति मानकर स्वीकार कर लेती हैं।

दरअसल, हमारे समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर जो चुप्पी है, वह मेनोपॉज़ के मामले में और अधिक गहरी हो जाती है। किशोरावस्था में मासिक धर्म पर बात करने में संकोच होता है और मध्य आयु में मेनोपॉज़ पर। परिणामस्वरूप महिला अपने जीवन के दो महत्वपूर्ण जैविक चरणों में पर्याप्त जानकारी और सहयोग से वंचित रह जाती है। यह स्थिति केवल ग्रामीण भारत तक सीमित नहीं है। शिक्षित और शहरी वर्ग में भी मेनोपॉज़ पर खुलकर चर्चा करने की संस्कृति अभी विकसित नहीं हो पाई है।

दुनिया के कई देशों ने इस विषय को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया है। ब्रिटेन में बड़ी कंपनियों और सरकारी संस्थानों ने 'मेनोपॉज़ पॉलिसी' लागू की है। वहां कार्यस्थलों पर महिलाओं को परामर्श, स्वास्थ्य सहायता और लचीले कार्य घंटे जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। जापान में मेनोपॉज़ से जुड़ी स्वास्थ्य सेवाएं सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था का हिस्सा हैं। ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। इन देशों ने समझ लिया है कि यदि महिलाओं के जीवन के इस चरण की उपेक्षा की गई, तो उसका प्रभाव केवल स्वास्थ्य पर नहीं, बल्कि उत्पादकता, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण पर भी पड़ेगा।

भारत में स्थिति अलग है। यहां अभी भी मेनोपॉज़ को व्यक्तिगत अनुभव मानकर छोड़ दिया जाता है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में इस विषय पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में भी महिलाओं को मेनोपॉज़ संबंधी परामर्श बहुत कम मिलता है। जबकि वास्तविकता यह है कि मध्यम आयु की महिलाओं की स्वास्थ्य आवश्यकताएं किशोरियों और गर्भवती महिलाओं से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं।

यदि हम आदिवासी महिलाओं की स्थिति को देखें, तो यह चिंता और बढ़ जाती है। देश के अनेक जनजातीय क्षेत्रों में महिलाएं कठिन भौगोलिक परिस्थितियों, सीमित स्वास्थ्य सुविधाओं और आर्थिक अभाव के बीच जीवन बिताती हैं। उनके लिए मेनोपॉज़ कोई चिकित्सकीय शब्द नहीं, बल्कि जीवन का ऐसा अनुभव है जिसे बिना समझे और बिना सहायता के सहन करना पड़ता है। कई आदिवासी समुदायों में महिलाओं को यह भी ज्ञात नहीं होता कि शरीर में हो रहे बदलाव एक सामान्य जैविक प्रक्रिया का हिस्सा हैं। पोषण की कमी, लगातार शारीरिक श्रम और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुंच उनकी समस्याओं को और जटिल बना देती है।

यहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है, क्या हम महिलाओं के स्वास्थ्य को केवल मातृत्व तक सीमित करके देख रहे हैं? यदि हां, तो यह दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। किसी भी समाज की प्रगति केवल इस बात से नहीं मापी जाती कि वह बच्चों और युवाओं की कितनी चिंता करता है, बल्कि इस बात से भी कि वह अपने नागरिकों के जीवन के हर चरण में कितना साथ देता है। मेनोपॉज़ इसी दृष्टि से एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है।

मीडिया की भूमिका भी यहां अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिस तरह पिछले कुछ वर्षों में मासिक धर्म, स्तन कैंसर और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषय सार्वजनिक चर्चा का हिस्सा बने हैं, उसी तरह मेनोपॉज़ को भी मुख्यधारा के विमर्श में स्थान मिलना चाहिए। दुर्भाग्य से यह विषय अभी भी समाचारों और जनजागरूकता अभियानों में बहुत कम दिखाई देता है। जबकि मीडिया यदि चाहे तो लाखों महिलाओं तक सही जानकारी पहुंचाने और समाज की सोच बदलने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

आवश्यकता केवल चिकित्सकीय सलाह की नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता की भी है। परिवारों को यह समझना होगा कि मेनोपॉज़ के दौरान महिला जिन शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तनों से गुजरती है, वे वास्तविक हैं और उन्हें समझे जाने की आवश्यकता है। कार्यस्थलों को भी महिलाओं की इस अवस्था के प्रति संवेदनशील बनना होगा। स्वास्थ्य नीतियों में मध्य आयु की महिलाओं के लिए विशेष प्रावधान किए जाने चाहिए। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्थानीय भाषाओं में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

मेनोपॉज़ को लेकर सबसे बड़ी चुनौती अज्ञानता नहीं, बल्कि चुप्पी है। जब तक समाज इस विषय पर खुलकर बात नहीं करेगा, तब तक लाखों महिलाएं अनावश्यक शारीरिक और मानसिक कष्ट झेलती रहेंगी। समय आ गया है कि हम मेनोपॉज़ को केवल एक चिकित्सकीय घटना के रूप में नहीं, बल्कि महिलाओं के सम्मान, स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता से जुड़े प्रश्न के रूप में देखें।

किसी भी समाज की प्रगति केवल उसकी आर्थिक उपलब्धियों या तकनीकी विकास से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से भी आंकी जाती है कि वह अपने नागरिकों, विशेषकर महिलाओं, की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं और जीवन के संवेदनशील चरणों के प्रति कितना जागरूक और उत्तरदायी है। मेनोपॉज़ कोई व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक संवेदनशीलता और लैंगिक समानता से जुड़ा विषय है। इसे चुप्पी, संकोच और उपेक्षा के दायरे से बाहर निकालकर संवाद और जागरूकता के केंद्र में लाने की आवश्यकता है। जब महिलाओं को सही जानकारी, सम्मानजनक स्वास्थ्य सेवाएं और परिवार तथा समाज का सहयोग मिलेगा, तभी वे जीवन के इस महत्वपूर्ण चरण को आत्मविश्वास और गरिमा के साथ जी सकेंगी। आधी आबादी के स्वास्थ्य और सम्मान को सुनिश्चित किए बिना किसी भी विकसित और समावेशी समाज की कल्पना अधूरी रहेगी।

आध्यात्मिक ज्ञान और संगठन शक्ति का अद्भुत समन्वय

जयंती पर विशेष
संत गुरु हरगोबिन्द सिंह

शिवकुमार शर्मा

स्वतंत्र लेखक

सिख पंथ की गौरवशाली परंपरा में दश संत हुए हैं जिन्होंने न केवल समाज में आध्यात्मिक ज्ञान का आलोक फैलाया है अपितु समाज को सद्भाव, समरसता, सामाजिक एकता, मजबूत संगठनात्मक शक्ति सेवा, समर्पण और स्वाभिमान से जीने का मार्ग भी दिखाया है।गुरु नानक देव जी सिख धर्म के संस्थापक और प्रथम गुरु थे। इनके बाद गुरु अंगद देव जी दूसरे गुरु बने, जिन्होंने 'गुरुमुखी लिपि' का विकास किया। तीसरे गुरु अमर दास जी जिन्होंने सती प्रथा और पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों का विरोध किया। गुरु राम दास जी चौथे गुरु हुए जिन्होंने अमृतसर की नींव रखी। गुरु अर्जुन देव जी पांचवें गुरु थे जिन्होंने स्वर्ण मंदिर (हरमंदिर साहिब) का निर्माण करवाया।

इसी परम्परा में छठे गुरु हुए गुरु हरगोबिंद सिंह जी उनका जन्म 19 जून 1595 को अमृतसर के पास 'गुरु की वडाली' नामक गांव में हुआ था।वे पांचवें गुरु, श्री गुरु अर्जुन देव जी और माता गंगा जी के इकलौते पुत्र थे। उनके पिता गुरु अर्जुन देव जी को मुगल सम्राट जहांगीर के आदेश पर शहीद कर दिया गया। इस घटना से गुरु हरगोबिन्द जी के जीवन की दिशा ही परिवर्तित हो गयी।

1606 ई. में मात्र 11 वर्ष की आयु में वे सिखों के गुरु बने। गुरु पद ग्रहण करते समय उन्होंने केवल आध्यात्मिक नेतृत्व ही नहीं, बल्कि समाज की रक्षा का संकल्प भी लिया। उन्होंने शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा ली। उनके व्यक्तित्व में संत और सैनिक दोनों के गुण विद्यमान थे। इसी कारण उन्हें 'संत-सिपाही' परंपरा का प्रवर्तक माना जाता है। गुरु साहिब ने सिखों को आध्यात्मिक रूप से मजबूत करने के साथ-साथ शारीरिक और सैन्य रूप से भी तैयार किया। उन्होंने दो तलवारें पहनीं- 'पीरी' (आध्यात्मिक शक्ति) और 'मीरी' (राजनीतिक/सैनिक शक्ति)। गुरु हरगोबिन्द जी का जीवन केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने धर्म की रक्षा, समाज की सुरक्षा और अन्याय के विरोध का भी मार्ग दिखाया।

1609 में, उन्होंने हरिमंदिर साहिब के समीप 'अकाल तख्त साहिब' (सदाकाल के तख्त) की नींव रखी। यह सिखों की सर्वोच्च धार्मिक और राजनीतिक संस्था का केंद्र बना। गुरु हरगोबिन्द जी ने सिखों को

युद्धकला का प्रशिक्षण देना आरम्भ किया। उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाजी और अस्त्र-शस्त्र के अभ्यास को प्रोत्साहित किया। उनके पास एक सुसंगठित सेना थी। उन्होंने अनेक किले और सुरक्षा व्यवस्थाएँ स्थापित कीं।उनका उद्देश्य किसी पर आक्रमण करना नहीं था, बल्कि अत्याचार और अन्याय से रक्षा करना था। उन्होंने सिखों में आत्मविश्वास और वीरता का संचार किया।

गुरु हरगोबिन्द सिंह की प्रेरणा से श्री अकाल तख्त साहिब का भी भव्य अस्तित्व निर्मित हुआ। देश के विभिन्न भागों की संगत ने गुरु जी को भेंट स्वरूप शस्त्र एवं घोड़े देने प्रारम्भ किए। अकाल तख्त पर कवि और ढाडियोंने गुरु-यश व वीर योद्धाओं की गाथाएं गानी प्रारम्भ की। लोगों में मुगल सल्तनत के प्रति विद्रोह जागृत होने लगा। गुरु हरगोबिन्द साहिब नानक राज स्थापित करने में सफलता की ओर अग्रसर हुए।। जहांगीर ने सिखों के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए गुरु हरगोबिन्दसाहिब को ग्वालियर के किले में बन्दी बना लिया। इस किले में और भी कई राजा, जो मुगल सल्तनत के विरोधी थे, पहले से ही कारावास भोग रहे थे। गुरु हरगोबिन्दसाहिब लगभग तीन वर्ष ग्वालियर के किले में बन्दी रहे। महान सूफी फकीर मीयांमीर गुरु घर के श्रद्धालु थे। जहांगीर की पत्नी नूरजहां मीयांमीर की सेविका थी। इन लोगों ने भी जहांगीर को गुरु जी की महानता और प्रतिभा से परिचित करवाया। बाबा बुड्ढा व भाई गुरदास ने भी गुरु साहिब को बन्दी बनाने का विरोध किया। जहांगीर ने केवल गुरु जी को ही ग्वालियर के किले से आजाद नहीं किया, बल्कि उन्हें यह स्वतंत्रता भी दी कि वे 52 राजाओं को भी अपने साथ लेकर जा सकते हैं। इसीलिए सिख इतिहास में गुरु जी को बन्दी छोड़ दाता कहा जाता है। ग्वालियर में इस घटना का साक्षी गुरुद्वारा दाता बन्दी छोड़ है। अपने जीवन मूल्यों पर दृढ रहते गुरु जी ने शाहजहां के साथ मुगलों के दमन और अत्याचार के खिलाफ उन्होंने पहली बार सिखों को हथियार उठाने के लिए प्रेरित किया और कई युद्धों (जैसे रोहिला, करतारपुर, अमृतसर (1634), हरगोबिंदपुर, गुरुसर, कीरतपुर की लड़ाइयां) में मुग़ल सेनाओं को हराया।

उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष उन्होंने कीरतपुर साहिब में बिताए।1644 में, वे ज्योति जोत समा गए और उनके छोटे सुपुत्र (गुरु) तेग बहादुर जी बाद में सिखों के नौवें गुरु बने। गुरुद्वारा पातालपुरी गुरु जी की याद में आज भी हजारों व्यक्तियों को शान्ति का संदेश देता है। भाई गुरुदास ने गुरु हरगोबिन्द साहिब की गौरव गाथा में लिखा है -

'पंज पिआले पंजपीर छटम्पीर बैठा गुर भारी,
अर्जुन काया पलट के मूरत हरगोबिन्द सवारी,
चली पीढ़ी सोढियां रूप दिखावन वारो-वारी,
दल भंजन गुर सूरमा बडयोद्धा बहु-परउपकारी॥'

भारत की माटी के तेजस्वी योद्धा संत गुरु हरगोबिन्द सिंह को शत-शत नमन।

जागरूकता और सर्तकता से ही निदान संभव

विश्व सिकल सेल दिवस

प्रो. मनोज कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

शरीर में असहनीय दर्द होने लगा लेकिन डॉक्टर के परामर्श के बाद समय पर दवा लेने और लगातार पानी पीने से वह बेहतर महसूस कर रहा है। ये वो सारे लोग हैं जिन्हें सिकलसेल रोग ने घेर रखा है। (सभी परिवर्तित नाम) बचपन से लेकर उम्रदराज होते लोगों में यह बीमारी पायी जाती है। यह ऐसी अदृश्य और गंभीर आनुवंशिक चुनौती है, जिसके बारे में आज भी समाज में जागरूकता की भारी कमी है। अक्सर लोग इसे सामान्य एनीमिया (खून की कमी) समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि यह एक जटिल वंशानुगत रक्त विकार है।

16 साल की छात्रा सुनीता खेलना चाहती है लेकिन जल्दी थक जाने से उसका मन उदास रहता है। इसके बावजूद वह निराश नहीं है और डॉक्टर की सलाह मानकर फिलहाल पढ़ाई पर ध्यान दे रही है। वहीं 24 साल की संगीता का कहना था कि शादी के बाद मुझे पता चला कि मुझे सिकलसेल है। पहले तो डर लग गया था, लेकिन धीरे-धीरे मैंने इसे समझना शुरू किया। गर्भावस्था के समय ज्यादा सावधानी रखनी पड़ी। परिवार का सहयोग मिला तो जीवन थोड़ा आसान हो गया। परेशान तो 18 के साल का रमेश भी है और उसे लगता था कि ऐसा क्या हुआ कि उसका किसी काम में मन नहीं लगता। शरीर में असहनीय दर्द होने लगा लेकिन डॉक्टर के परामर्श के बाद समय पर दवा लेने और लगातार पानी पीने से वह बेहतर महसूस कर रहा है। ये वो सारे लोग हैं जिन्हें सिकलसेल रोग ने घेर रखा है। (सभी परिवर्तित नाम) बचपन से लेकर उम्रदराज होते लोगों में यह बीमारी पायी जाती है। यह ऐसी अदृश्य और गंभीर आनुवंशिक चुनौती है, जिसके बारे में आज भी समाज में जागरूकता की भारी कमी है। अक्सर लोग इसे सामान्य एनीमिया (खून की कमी) समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि यह एक जटिल वंशानुगत रक्त विकार है। 19 जून को विश्व सिकल सेल दिवस के रूप में यूनाइटेड नेशन ने 2008 में मान्यता दी थी। इसका उद्देश्य सिकल सेल रोग को एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में पहचान दिलाना और इसके प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाना है। यह दिवस सिकल सेल रोग के बारे में लोगों को जागरूक करने, समय पर जांच और उपचार को बढ़ावा देने तथा रोग से प्रभावित लोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

यह बीमारी न केवल मरीज को शारीरिक और मानसिक रूप से तोड़ती है, बल्कि उनके परिवारों और पूरे समाज के आर्थिक-सामाजिक ढांचे को भी गहराई से प्रभावित करती है। भारत जैसे देश में, जहाँ की एक बड़ी आबादी आज भी ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में रहती है, इस बीमारी का सही समय पर निदान और प्रबंधन एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन चुका है। मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिकलसेल के खिलाफ अभियान की शुरूआत की थी। तय किया गया है कि आने वाले 2047 तक देश को सिकलसेल रोग मुक्त बनाया जाएगा।

यहां जान लेना जरूरी है कि सिकल सेल रोग आखिर है क्या? इस बारे में डॉक्टरों के अनुसार शरीर में रक्त का प्रवाह लाल रक्त कोशिकाओं के माध्यम से होता है। सामान्य स्थिति में ये कोशिकाएं गोल, चिकनी और लचीली होती हैं, जो ऑक्सीजन को फेफड़ों से शरीर के सभी अंगों तक आसानी से पहुँचाती हैं। गोल आकार के कारण ये खून की अत्यंत पतली नसों में भी बिना किसी रुकावट के तैरती रहती हैं। इसके विपरीत, सिकल सेल रोग से पीड़ित व्यक्ति के शरीर में ये कोशिकाएं कडक़, चिपचिपी और हँसिए के आकार की हो जाती हैं। आकार में आए इस दोषपूर्ण बदलाव के कारण शरीर में मुख्य रूप से दो बड़ी समस्याएं उत्पन्न होती हैं-रक्त प्रवाह में अवरोध, हँसिए के आकार की कड़क़ कोशिकाएं लचीली नहीं होतीं। जब ये छोटी रक्त वाहिकाओं से गुजरती हैं, तो आपस में उलझकर नस को ब्लॉक कर देती हैं। इससे शरीर के अंगों तक ऑक्सीजन और पोषण नहीं पहुँच पाता, जिससे असहनीय दर्द का दौरा पड़ता है। इसे चिकित्सकीय भाषा में 'सिकल सेल क्राइसिस' (Sickle Cell Crisis) कहा जाता

है। क्रोनिक एनीमिया (खून की कमी) एक सामान्य गोल लाल रक्त कोशिका का जीवनकाल लगभग 120 दिनों का होता है। वहीं, सिकल सेल वाली दोषपूर्ण कोशिकाएं इतनी कमजोर होती हैं कि वे मात्र 10 से 20 दिनों में ही टूटकर नष्ट हो जाती हैं। बोन मैरो (अस्थि मज्जा) इतनी तेजी से नई कोशिकाओं का निर्माण नहीं कर पाता, जिसके परिणामस्वरूप मरीज के शरीर में हमेशा खून की भारी कमी बनी रहती है।

बीमारी के प्रमुख लक्षण और प्रभावसिकल सेल के लक्षण बचपन में ही (लगभग 5 से 6 महीने की उम्र में) दिखाई देने लगते हैं। इसके पीड़ित को तीव्र और असहनीय दर्द इस बीमारी का सबसे भयानक रूप है। नसों में रुकावट के कारण हड्डियों, सीने, पीठ, हाथ और पैरों में अचानक तेज दर्द उठता है जो कई दिनों तक रह सकता है। रक्त प्रवाह बाधित होने से बच्चों के हाथों और पैरों की उंगलियों में दर्दनाक सूजन आ जाती है। सिकल सेल रोग शरीर की तिल्ली को धीरे-धीरे नष्ट कर देता है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता का मुख्य हिस्सा है। इस कारण मरीजों को निमोनिया और अन्य जानलेवा संक्रमण जल्दी पकड़ते हैं। निरंतर खून की कमी से मरीज हमेशा थका हुआ रहता है। लाल कोशिकाओं के तेजी से नष्ट होने के कारण आँखों में पीलापन (पीलिया) आ जाता है। पीड़ित बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास भी सामान्य बच्चों की तुलना में धीमा होता है।

यह भी कि सिकल सेल रोग केवल एक स्वास्थ्य समस्या नहीं है, बल्कि यह प्रभावित परिवारों को गहरे आर्थिक संकट में धकेल देता है। इस बीमारी के इलाज के लिए जीवनभर दवाइयां (जैसे हाइड्रोक्सीयूरिया), नियमित रक्त परीक्षण और बार-बार ब्लड ट्रांसफ्यूजन (रक्त चढ़ाने) की आवश्यकता होती है। कई बार ग्रामीण और गरीब परिवारों के लिए यह मासिक खर्च उनके बजट से बाहर होता है। मरीज की देखभाल के लिए परिवार के कमाऊ सदस्यों को अपनी मजदूरी या नौकरी छोडऩी पड़ती है। सिकल सेल आनुवंशिक होने के कारण, प्रभावित परिवारों के युवाओं को विवाह के बाजार में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि किसी महिला को यह बीमारी है, तो उसे अक्सर पारिवारिक और वैवाहिक उपेक्षा झेलनी पड़ती है। आमतौर इस रोग के बारे में शिक्षित ना होने के कारण यह मान लिया जाता है कि सिकल सेल रोग छुआछूत से होता है, वास्तविकता यह है कि यह कोई छुआछूत की बीमारी नहीं है। यह पूरी तरह से वंशानुगत रोग है। दो सिकल सेल पीड़ित विवाह करते हैं, तब होने वाली संतान में यह रोग होने के 25 फीसदी चांस होता है। मरीजों को भरपूर पानी पीना चाहिए (ताकि खून गाढ़ा न हो), संतुलित आहार लेना चाहिए और संक्रमण से बचने के लिए समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए।

सिकलसेल रोग से निपटने के लिए अनेक स्तरों पर प्रयास किया जा रहा है। भारत सरकार ने इस दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए वर्ष 2047 तक देश से सिकल सेल एनीमिया के पूर्ण उन्मूलन का लक्ष्य रखा है। इसके तहत 'राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन' चलाया जा रहा है, जिसमें करोड़ों लोगों की मुफ्त जांच कर उन्हें 'सिकल सेल जेनेटिक स्टेटस कार्ड' दिए जा रहे हैं ताकि विवाह से पहले जोखिम का पता लगाया जा सके। सिकल सेल रोग के खिलाफ पूरे समाज की सोच में आर्थिक और सामाजिक बदलाव लाना होगा। इस बीमारी को रोकने का सबसे अचूक और सरल हथियार है--जागरूकता और विवाह पूर्व जांच। जैसे विवाह से पहले पारंपरिक जन्म-कुंडली का मिलान किया जाता है, वैसे ही अनिवार्य रूप से 'सिकल सेल कुंडली' (रक्त जांच रिपोर्ट) का मिलान किया जाना चाहिए। समाज को सिकल सेल के मरीजों के प्रति हीनभावना या भेदभाव त्यागकर संवेदनशीलता अपनानी होगी और प्रभावित परिवारों को सामाजिक सुरक्षा देनी होगी, तभी एक स्वस्थ और सिकल-सेल मुक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है। मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल की सक्रियता सिकल सेल रोग के खिलाफ उल्लेखनीय है। सब कुछ सरकार के भरोसे छोडक़र सरकार की सहायता से बीमारियों पर रोकथाम के लिए आगे आने का संकल्प लेना होगा।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर और मुख्य सचिव अनुराग जैन ने हितग्राहियों से किया संवाद;बदनावर में 'जनकल्याण शिविर' में 1036 आवेदन प्राप्त हुए

राजस्व विभाग ने ओटा विवाद, रास्ता विवाद, नामांतरण और बंटवारा जैसी जटिल समस्याओं को मौके पर ही सुलझाकर ग्रामीणों को दी बड़ी राहत

धार। जनपद पंचायत बदनावर में आयोजित 'जनकल्याण शिविर' आज आमजन के लिए राहत और खुशियों लेकर आया। केंद्र और राज्य सरकार की मंशानुसार, प्रशासन को सीधे जनता के द्वार पर ले जाने के इस अभिनव प्रयास में सुशासन की एक ऐतिहासिक तस्वीर देखने को मिली। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर एवं मध्य प्रदेश शासन के मुख्य सचिव अनुराग जैन ने संवेदनशीलता और आत्मीयता के साथ आम नागरिकों से सीधा संवाद किया।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि जनकल्याण शिविर शासन और जनता के बीच विश्वास एवं जीवंत संवाद का सबसे सशक्त माध्यम हैं। इन शिविरों के माध्यम से लोगों की समस्याओं का समाधान उनके द्वार पर ही सुनिश्चित किया जा रहा है। सरकार की मंशा है कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति को बिना किसी दफ्तर के चक्कर काटे शासन की सेवाओं का सहज लाभ मिल सके।मुख्य सचिव अनुराग जैन ने विभिन्न विभागों की योजनाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को हितग्राहीमूलक योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं समयबद्ध सेवा वितरण के निर्देश दिए। उन्होंने हितग्राहियों से संवाद कर योजनाओं के लाभ की जानकारी प्राप्त की और कहा कि शासन की प्राथमिकता अंतिम व्यक्ति तक विकास और

कल्याणकारी योजनाओं का लाभपहुंचाना है।सुशासन की इस महा-पहल के तहत शिविर में विभिन्न विभागों से प्राप्त कुल 1036 आवेदनों को न केवल पंजीकृत किया गया। तत्परता दिखाते हुए सभी 1036 आवेदनों पर आवश्यक कार्यवाही की गई तथा पात्र हितग्राहियों को तत्काल प्रमाण-पत्र और हितलाभ सौंपे गए।

शिविर का सबसे सकारात्मक और राहतकारी पहलू राजस्व विभाग के काउंटर पर देखने को मिला। ग्रामीणों के जीवन को सुगम बनाने की दिशा में तत्परता दिखाते हुए राजस्व अमले ने कुल 98 प्रकरणों का मौके पर ही शत-प्रतिशत निराकरण किया। वर्षों से लंबित रहने वाले आपसी रास्ता विवाद के 2 प्रकरण, बटवारा के 2, ओटा विवाद का 1 और अवैध कब्जे का 1 प्रकरण आपसी सहमति और प्रशासनिक कुशलता से तुरंत सुलझा लिया गया। इसके साथ ही, रजिस्ट्री नामांतरण के 9, फ़ौती नामांतरण के 5, सामान्य नामांतरण के 2, वसीयत व दान रजिस्ट्री नामांतरण के 1-1 प्रकरण का मौके पर ही संपादन कर सीधे तौर पर किसानों और ग्रामीणों की चिंता दूर की गई। ई-टोकन, सीमांकन, नक्शा शुद्धिकरण और बैंक में जमा राशि वापस प्राप्त करने के आवेदनों पर भी अधिकारियों ने तत्काल निर्णय लेकर ग्रामीणों को तत्काल राहत दी, जिससे जनता का भरोसा प्रशासन पर और अधिक मजबूत हुआ।

महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी यह शिविर मील का पत्थर साबित हुआ। महिला एवं बाल विकास विभाग की लाड़ली लक्ष्मी योजना के अंतर्गत रिकॉर्ड 306 बेटियों को लाभान्वित किया गया, जबकि पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की लखपति दीदी योजना के तहत 149 महिलाओं को आर्थिक स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त किया गया। किसानों को समृद्धि का संबल देते हुए सहकारिता विभाग द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड के 215 आवेदनों को स्वीकृत व नवीनीकृत किया गया। वहीं स्वास्थ्य विभाग की प्रसूति सहायता योजना से 145 माताओं को सीधे तौर पर आर्थिक सुरक्षा मिली। सामाजिक न्याय विभाग के माध्यम से 87 वृद्धजनों और दिव्यांगों को पेंशन व कृत्रिम अंग वितरित किए गए, जिससे उनके जीवन में नई सुगमता आई।

इस गरिमामयी और ऐतिहासिक अवसर पर पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, नगर पालिका अध्यक्ष मीना शेखर यादव, कलेक्टर राजीव रंजन मीना, पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी पूरे समय मुस्तैद रहे।

मंत्री सावित्री ठाकुर ने मनावर को दी आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की सौगात

धार। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री तथा धार-महू लोकसभा क्षेत्र की सांसद सावित्री ठाकुर ने आज धार जिले के मनावर विकासखंड में आयोजित जन कल्याण शिविर के अंतर्गत नवनिर्मित 50 बिस्तरीय सिविल अस्पताल भवन का विधि-विधान से शुभारंभ कर उसे आम जनता को समर्पित किया। इस सर्वसुविधायुक्त चिकित्सालय भवन का निर्माण लगभग 951.21 लाख रुपये की लागत से किया गया है। लोकार्पण अवसर पर संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार नागरिकों को सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह संकल्पित है। उन्होंने कहा कि मनावर में निर्मित यह आधुनिक अस्पताल क्षेत्र की स्वास्थ्य अधोसंरचना को मजबूत करेगा। इस सर्वसुविधायुक्त अस्पताल के प्रारंभ होने से अब मनावर सहित आसपास के सुदूर ग्रामीण अंचलों के नागरिकों को स्थानीय स्तर पर ही उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं प्राप्त होंगी। अब गंभीर एवं सामान्य उपचार के लिए क्षेत्रवासियों को दूरस्थ बड़े शहरों की ओर रुख नहीं करना पड़ेगा, जिससे नागरिकों के समय और आर्थिक संसाधनों दोनों की बचत होगी।

बिना संबंधों के पैदा नहीं होता समर्पण, संघर्ष और त्याग : पं. मनावत

भारत भारती में समर्थ शिशु श्रीराम कथा के संबंधों पर दिए प्रवचन

बैतूल । हमारा भारत देश संबंध निभाने वाला देश है। यहां पर धरती को माँ का दर्जा दिया जाता है। इसके अलावा नदियों को भी माँ माना जाता है। हमारे देश में भगवान से पुत्र और पति के रूप में भी रिश्ता बनाया जाता है। उक्त प्रवचन भारत भारती शिक्षा समिति के तत्वावधान में आयोजित समर्थ शिशु श्रीराम कथा के तीसरे दिन पं. श्याम स्वरूप मनावत ने दिए। पं. मनावत ने भारत की शक्ति का वृतांत बताते हुए कहा कि भारत संबंधों का देश है। यहां संपूर्ण जीवन संबंधों से बंधा हुआ है। हमने भूमि को भी भूमि मात्र नहीं कहा बल्कि उसे मां के रिश्ते में बांधकर मातृभूमि कहा। हमने गंगा, गीता, गायत्री को भी मां कहा है। क्योंकि अपना देश संबंधों पर निर्भर करता है। 16 साल का खुदीराम बोस इस इसलिए फांसी के फंदे पर झूल गया क्योंकि वह भारत को अपनी मां मानता था। बिना संबंधों के समर्पण, संघर्ष और त्याग नहीं पैदा होता।

माँ का भाव जाग्रत करता है वंदेमातरम मंत्र- वंदेमातरम वह

मंत्र है जिसमें अपनी भूमि के प्रति मां का भाव जाग्रत होता है। वह संबंधों की ही शक्ति है भारत देश में परमात्मा को भी पुत्र बना लिया जाता है। महाराज मनु ने परमात्मा को पुत्र बना लिया, तो महाराज हिमाचल ने जगदंबा को अपनी बेटी बना लिया। राजस्थान की धरती की भक्तिमति मीरा जी ने भगवान को अपना पति बना लिया। यह संबंधों की ही ताकत है की वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा छछिया भर छाछ के लिए गोपियों के सामने नृत्य करता है।

श्रेष्ठ संतान की उत्पत्ति पर होना चाहिए विचार- पंडित मनावत ने कहा कि ईश्वर के साथ संबंध बनाकर उसे ही पुत्र के रूप में प्राप्त करने की कामना करना जो ईश्वर जैसा पुत्र प्राप्त करना चाहता है वह भगवान की भक्ति के माध्यम से ईश्वर को अपना बेटा बन सकता है। श्रेष्ठ संतान उत्पत्ति की भूमिका रखते हुए कथा व्यास पंडित श्याम मनावत ने कहा की कहा हमने गेहूं,धान और चना का उत्पादन ठीक कैसे हो? इस पर तो कई यूनिवर्सिटी काम कर रही है, परंतु श्रेष्ठ संतान की उत्पत्ति पर विचार करना ही आवश्यक नहीं समझा गया। संतान श्रेष्ठ नहीं होगी तब तक दुनिया की समस्त भौतिक वस्तुओं का न कोई सदुपयोग है न ही कोई महत्व है।

राष्ट्रपति के बैतूल प्रवास पर आने के दौरान रास्ते किए बंद, लोगों की पुलिस से हुई बहसबाजी

बैतूल। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के बैतूल प्रवास के दौरान शहर में चाक चौबंद व्यवस्था की गई थी। शहर के चौक चौराहों पर सुरक्षा के तहत पुलिस की कड़ी व्यवस्था थी। जगह-जगह वाहनों के साथ ही लोगों के पैदल आवागमन को रोक दिया गया था। इस दौरान कुछ लोगो की पुलिसकर्मियों से बहसबाजी भी हुई। कोठीबाजार में फूल विक्रेता को पूजा के लिए फूल देने जाना था लेकिन रास्ता बंद होने के कारण वापस लौटना पड़ा। पालकों को अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने जाने के दौरान दिक्कतें हुई। हालांकि स्कूल की प्राथमिकता को देखते हुए पुलिस ने पालक और बच्चे को जाने दिया। शहर में कई जगहों पर ऐसे ही नजारे थे।

राष्ट्रपति के प्रथम बैतूल आगमन पर हुआ आत्मीय एवं गरिमामय स्वागत

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के प्रथम बैतूल आगमन पर हेलीपेड परिसर में उनका गरिमामय स्वागत किया गया। प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने पुष्पगुच्छ भेंट कर राष्ट्रपति का स्वागत किया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री डी.डी. उइके, प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल एवं भाजपा अध्यक्ष व बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने राष्ट्रपति महोदया का अभिनंदन किया। इसके अतिरिक्त घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उइके, भैंसदेही विधायक महेंद्र सिंह चौहान, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख तथा आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने भी पुष्पगुच्छ भेंट कर राष्ट्रपति का स्वागत किया।

जनजातीय महिलाओं द्वारा तैयार उत्पादों की राष्ट्रपति ने की प्रशंसा

लालबहादुर शास्त्री स्टेडियम में आयोजित महासम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति ने विभिन्न प्रदर्शनी एवं स्टॉलों का अवलोकन किया। उन्होंने विशेष रूप से मोटे अनाज एवं अन्य खाद्य पदार्थों से तैयार 18 प्रकार के पौष्टिक व्यंजनों की प्रदर्शनी का निरीक्षण किया और उनकी सराहना की। राष्ट्रपति ने गौशालाओं द्वारा निर्मित उत्पादों सहित अन्य स्टॉलों का भी अवलोकन किया तथा उत्पाद तैयार करने वाले समूहों और जनजातीय महिलाओं को निरंतर आगे बढ़ने एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया।

'एक वृक्ष मां के नाम' अभियान के तहत किया रुद्राक्ष का पौधरोपण

बैतूल। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 'एक वृक्ष मां के नाम' अभियान के अंतर्गत रुद्राक्ष/कल्पतरु का

पौधरोपण किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ बैतूल केंद्र की प्रभारी मंजू दीदी ने राष्ट्रपति को शॉल एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर उनका स्वागत किया। इसके बाद राष्ट्रपति के आगमन पर 7 सदस्यीय कलाकारों द्वारा आकर्षक और मनमोहक स्वागत नृत्य की प्रस्तुति दी गई। राष्ट्रपति ने इस ऐतिहासिक आयोजन के सफल संचालन के लिए ब्रह्माकुमारीज़ बैतूल की प्रभारी मंजू दीदी, बीके तरुण तथा कार्यक्रम से जुड़े आयोजकों की सराहना की।

कांग्रेस ने बैतूल जिले के 29 ब्लॉक-उपब्लॉकों में नियुक्त किए प्रभारी

जिला अध्यक्ष अध्यक्ष के नेतृत्व में संगठन महासचिव ने जारी की 29 प्रभारियों की सूची

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी बैतूल ने बड़ा संगठनात्मक फैसला लेते हुए जिले के सभी ब्लॉक, नगर एवं उपब्लॉकों के लिए 29 प्रभारियों की नियुक्ति कर दी है। पूर्व विधायक एवं जिला कांग्रेस अध्यक्ष निलय डागा के नेतृत्व में कांग्रेस संगठन को और अधिक सशक्त, सक्रिय एवं जनहितैषी बनाने के उद्देश्य से जिले के सभी ब्लॉक एवं उपब्लॉकों में प्रभारियों की नियुक्ति की गई है। संगठन महासचिव बृजभूषण पांडे द्वारा जारी सूची के अनुसार बैतूल नगर का प्रभारी सुनील जेधे, बैतूल ग्रामीण भद्दू झरे, आठनेर में गजानंद खंडागले, आठनेर नगर अशोक लोखंडे, बैतूलबाजार नगर संजय शरद वर्मा, घोड़ाडोंगरी ब्लॉक कन्हैया राठौर, चोपना उपब्लॉक अमरेश मंडल, पाढर उपब्लॉक मुकेश मालवीय, भौंरा उपब्लॉक अंबिका मिश्रा, शाहपुर ब्लॉक राकेश साहू, चिचोली ब्लॉक संतोष बटनू पटेल, चिचोली नगर सुधीर जैसवाल तथा शाहपुर नगर में धर्मेंद्र शुक्ला को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसी प्रकार घोड़ाडोंगरी नगर में ललित शर्मा, भैंसदेही बबन राठौर, भीमपुर राजकुमार रायपुरे, दमजीपुरा उपब्लॉक के लिए धन्नू धुर्वे, हिडली उपब्लॉक के लिए मधु कुमरे, भैंसदेही नगर के लिए राज धाड़से, आमला ब्लॉक नीरज सोनी, सारनी ब्लॉक सुरेश पंड्या, सारनी ग्रामीण ज्ञानेश्वर पाटिल, बोरदेही उपब्लॉक सुरेश साहू तथा आमला नगर में साबिर शाह को प्रभारी नियुक्त किया गया है। सूची में मुलताई ब्लॉक के लिए संजय यादव, दुनावा उपब्लॉक के लिए कुबेर सिंह रघुवंशी, प्रभात पट्टन डॉ. विजय देशमुख, मासोद उपब्लॉक में शिवचरण साहू तथा मुलताई नगर के लिए कमल सोनी को जिम्मेदारी दी गई है। राजनीतिक जानकार इसे कांग्रेस की आगामी चुनावी रणनीति का हिस्सा मान रहे हैं, जिसके जरिए पार्टी बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय कर जनसंपर्क अभियान को गति देना चाहती है। जिला कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता लवलेश बब्बा राठौर ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला कांग्रेस नेतृत्व संगठन को गांव, वार्ड और बूथ स्तर तक मजबूत बनाने के लिए लगातार काम कर रहा है। नव नियुक्त प्रभारियों को जल्द ही क्षेत्रवार जिम्मेदारियां सौंपकर जनसमस्याओं, सदस्यता अभियान और संगठन विस्तार की गतिविधियों में सक्रिय किया जाएगा।

ई-विकास प्रणाली से अब सभी पात्र किसानों को मिलेगा खाद

बैतूल। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों की संयुक्त बैठक में जिले में संचालित विभिन्न विकास कार्यों, कृषि योजनाओं तथा उर्वरक वितरण व्यवस्था की समीक्षा की गई। बैठक में केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल, विधायक भैंसदेही महेंद्र सिंह चौहान, विधायक मुलताई चंद्रशेखर देशमुख, विधायक आमला डॉ योगेश पंडाग्रे, जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पवार, कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में खरीफ सीजन 2026 के लिए खाद की उपलब्धता एवं वितरण व्यवस्था, नगरीय विकास कार्यों तथा विभिन्न समूह सिंचाई परियोजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। जनप्रतिनिधियों ने मेढ़ा एवं गढ़ा समूह सिंचाई परियोजनाओं के कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए, ताकि किसानों को समय पर सिंचाई सुविधाओं का लाभ मिल सके। बैठक में जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल कुकरु को प्रदेश के सबसे बड़े पर्यटन केंद्रों में विकसित करने की संभावनाओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही विभिन्न विकास कार्यों में आ रही बाधाओं का त्वरित निराकरण कर समयसीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश संबंधित विभागों को दिए गए।

बैठक में उप संचालक कृषि ने बताया कि खरीफ 2026 में ई-विकास प्रणाली (वितरण एवं कृषि उर्वरक आपूर्ति समाधान) के माध्यम से जिले के विभिन्न श्रेणी के किसानों को खाद उपलब्ध कराया जाएगा।

सोहागपुर ब्लड बैंक ग्रुप ने कराया 4 सौ वां रक्तदान

सोहागपुर। सोहागपुर ब्लड बैंक ग्रुप ने विगत दिवस 4सौ वां रक्तदान नर्मदापुरम में करवाया। उक्त सोहागपुर ब्लड ग्रुप के माध्यम से ओ नेगेटिव की आवश्यकता पड़ने पर सोहागपुर ब्लड बैंक के रेगुलर डोनेटर हैप्पी नामदेव ने मोटरसाइकिल से जाकर रक्तदान किया। सोहागपुर ब्लड ग्रुप के संचालक ताज खां ने बताया कि इस वाट्सएप ग्रुप में करीबन एक हजार सदस्य हैं। पिछले ढाई वर्ष पूर्व सौ लोगों से बनाया गया था। जो अब सोहागपुर ब्लड बैंक 1 और सोहागपुर ब्लड बैंक 2 नाम से चल रहा है वर्तमान में अब ऐसा समय आ गया है कि ब्लड लगने के लिए दो आवेदन एवं ब्लड देने के लिए 10 लोग रोज उत्सुक रहते हैं। हम किसी को ब्लड पहुंचने से पहले यह भी पता करते हैं कि उनके परिवार वालों ने ब्लड दिया है या नहीं या उनके परिवार वालों में ब्लड देने लायक लोग हैं

कि नहीं उसके बाद ही हम सोहागपुर से नर्मदापुरम के लिए रक्तदाता पहुंचते हैं। उल्लेखनीय है कि एक रक्तदाता को नर्मदापुरम पहुंचने में ब्लड बैंक की तरफ से रू. 1500 का खर्चा आता है। उक्त राशि जन्मदिवस आदि के डोनेशन के पैसों से रक्तदाताओं को नर्मदापुरम पहुंचाया जाता है। वहीं कई रक्तदाता स्वयं के खर्चे से भी नर्मदापुरम जाते हैं। क्षेत्र नागरिकों के लिए सोहागपुर ब्लड बैंक ग्रुप लाइब लाइन बना हुआ है। उल्लेखनीय है कि सोहागपुर ब्लड ग्रुप ने एक एक्सीडेंटल केस में 1 घंटे में 80 हजार एकत्रित कर अस्पताल के बिल में ही डाले थे।

सोहागपुर पुलिस को मिली कामयाबी, सचिन पुर्बिया के हत्यारे बुधनी जिला सीहोर निवासी को 24 घंटे में किया गिरफ्तार

सोहागपुर। सोहागपुर थाने के अंतर्गत रानी पिपरिया में राजपूत ढाबा अजनेरी के संचालक सचिन पुर्बिया की विगत दिवस रानी पिपरिया नहर की पुलिया के पास सिर में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इससे सोहागपुर एवं आस-पास के क्षेत्रों में सनसनी फ़ैल गई थी। जिसमें तरह तरह की चर्चा व्याप्त थी कि आखिर क्या ढाबे पर जो व्यक्ति मुंह में कपड़ा बांधाकर मोटर साइकिल से आए शक्स के साथ सचिन गया था। उसकी हत्या उसने कर दी थी।

क्योंकि मृत सचिन बातचीत करने के बाद उसकी मोटर साइकिल पर बैठाकर गया था। तभी से सचिन पुर्बिया का पता नहीं लग रहा था। इसके साथ उसका मोबाइल नंबर भी नहीं उठाया जा रहा था।यह यक्ष प्रश्न बना हुआ था। प्रथम दृष्टया हत्या करने की सुई नोक उसी अज्ञात व्यक्ति के इर्द-गिर्द घुम रही थी। इधर परिजनों ने भी सोहागपुर आकर रास्ता जाम कर दिया था। ऐसे में विगत तीन दिन पूर्व ही सोहागपुर पुलिस थाने की कमान संभालने वाले नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी ने सभी को आश्वस्त किया था।कि शीघ्र ही हत्या का खुलासा कर देंगे। हुआ भी यही।इधर पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम श्री साईं कृष्ण एस थोटा ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए घटनास्थल का निरीक्षण किया था।

इसके सकारात्मक परिणाम भी हत्या के 24 घण्टे में खुलासा होने से आ गए। इस मामले में पुलिस द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति कहा गया है कि पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम् श्री साई कृष्ण एस. थोटा आईपीएस के निर्देशन मे एवं श्रीमान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम् श्री अभिषेक राजन रा.पु.से के मार्गदर्शन एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सोहागपुर श्री संजू चौहान के नेतृत्व में सोहागपुर पुलिस नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी आदि ने

सचिन पुर्बिया की हत्या के आरोपी विवेक पिता धनीराम गुर्जर उम्र 30 साल निवासी होलीपुरा, बुधनी जिला सीहोर को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की। पुलिस ने बताया कि घटना में दिनांक 17 जुलाई.26 को फरियादी राजू उर्फ राजकुमार पुर्विया पिता नारायण सिंह पुर्विया उम्र 34 साल निवासी भार्गव मोहल्ला शोभापुर थाना सोहागपुर ने सचिन पिता नारायण सिंह पुर्विया उम्र 28 साल निवासी भार्गव मोहल्ला शोभापुर की सिर मे गोली मारकर हत्या करने की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिसमें थाना सोहागपुर में अपराध क्रमांक 394/26 धारा 103(1) बीएनएस का अज्ञात आरोपी के विरूद्ध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया था। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक महोदय नर्मदापुरम् के द्वारा नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी के नेतृत्व में अज्ञात आरीपो की तलाश हेतु टीम का गठन किया गया। जिसमें पुलिस टीम ने भौतिक एवं तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर संदेही विवेक पिता धनीराम गुर्जर उम्र 30 साल निवासी होलीपुरा, बुधनी जिला सीहोर को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। जिसमें चरित्र शंका को लेकर सचिन पिता नारायण सिंह पुर्विया निवासी भार्गव मोहल्ला शोभापुर को बातचीत करने के बहाने से राजपूत ढाबा अजनेरी से अपनी मोटर सायकिल पर बैठाकर पांजरा रोड, ग्राम रानी पिपरिया नहर की पुलिया पर ले जाकर सिर में गोली मारकर हत्या करना स्वीकार किया। पुलिस ने अभियुक्त विवेक गुर्जर की निशादेही पर

हत्या में प्रयुक्त एक देशी पिस्टल कीमती करीबन 20 हजार रूपये, टीवीएस कंपनी की मोटरसायकिल, मोबाईल एवं घटना के समय पहने हुये कपड़े जप्त किए गए हैं। पुलिस ने सचिन पुर्बिया की हत्या में अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया।

24 घंटे तत्परता आरोपी को गिरफ्त करने वाले टीम- थाना प्रभारी नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी, उपनिरीक्षक राहुल पटेल, उपनिरीक्षक विवेक यादव, उपनिरीक्षक शहादत अली, सउनि वरूण सिंह, आरक्षक 782अंकुश, 736 राममोहन, 744 मनोहर दायमा, 647 नंदकिशोर रजक, 27 अफसर खान, 980 राजकुमार, 716 जोशवा मसीह, 304 नरेन्द्र भदौरिया, सायबर सेल आरक्षक संदीप, दीपेश आदि थे।

संक्षिप्त समाचार

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम तरबरिया में मनाया गया बावड़ी उत्सव

विदिशा (निप्र)। जल संरक्षण और पारंपरिक जल स्रोतों के संवर्धन के उद्देश्य से प्रदेश व्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत सिरोंज तहसील के इमलानी सेक्टर स्थित ग्राम तरबरिया में बावड़ी उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन नवांकुर संस्था प्याराखेड़ी जय मां जन सेवा समिति, द्वारा किया गया एवं सहयोग ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति तरबरिया का रहा। बावड़ी उत्सव के दौरान ग्रामीणों और श्रमदानियों ने बावड़ी न होने की स्थिति में कुएं की साफ-सफाई कर उसके संरक्षण का संदेश दिया। इसके पश्चात कुंआ पर पूजन किया गया तथा रंगोली बनाकर और दीपों से सजाकर जल स्रोत के प्रति सम्मान प्रकट किया गया। एवं उपस्थित सभी लोगों को जल संरक्षण संबधी सपथ दिलाई गई तथा कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने मां गंगा की आरती उतारी और जल संरक्षण का संकल्प लिया। श्रमदान कार्य में ग्राम इमलानी, लिधौरा तरबरिया की सहयोगी समितियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। स्थानीय ग्रामीणों की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने कार्यक्रम को सफल बनाया। आयोजन के माध्यम से जल स्रोतों के संरक्षण और सामुदायिक जागरूकता का संदेश दिया गया।

ग्राम छीपानेर में अवैध रूप से भण्डारित 2640 किलोग्राम डीजल जब्त

सीहोर (निप्र)। जिले के भैरूंदा क्षेत्र में अवैध रूप से डीजल भण्डारण के मामले में प्रशासन ने कार्रवाई की है। भैरूंदा एसडीएम श्री सुधीर कुशवाहा के निर्देश पर ग्राम छीपानेर में घर पर अवैध रूप से डीजल रखे होने की सूचना मिलने पर जांच की गई। नायब तहसीलदार सुश्री आरती सोलंकी ने राजस्व निरीक्षक गोपालपुर एवं खाद्य विभाग की टीम के साथ शिवम गंधवाने पिता रामचन्दर गंधवाने के घर पहुंचकर जांच की। जांच के दौरान घर में 12 टंकियों में डीजल भरा हुआ मिला। प्रत्येक टंकी में लगभग 220 किलोग्राम डीजल के हिसाब से कुल 2640 किलोग्राम डीजल का अवैध भण्डारण पाया गया। पूछताछ में शिवम गंधवाने ने बताया कि यह डीजल ग्राहकों को विक्रय करने के उद्देश्य से सीहोर स्थित तक्षहरु इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से लिया गया था। प्रशासन द्वारा अवैध रूप से भण्डारित डीजल जब्त कर छीपानेर किसान सेवा केन्द्र की सुपुर्दगी में दिया गया है। मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

उन्नत एवं आधुनिक कृषि यंत्रों को बढ़ावा देकर कृषि को बनाएं लाभ का व्यवसाय : कलेक्टर सोमेश मिश्रा

नर्मदापुरम (निप्र)। प्रतिवर्ती हल, सबसॉइलर, स्ट्रॉ रीपर, रोटावेटर, ग्रेडर मशीन, स्प्रेयर सहित विभिन्न उन्नत कृषि यंत्रों का अवलोकन किया तथा उनके उपयोग एवं कार्यप्रणाली की विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर कलेक्टर श्री मिश्रा ने किसानों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि किसान कस्टम हायरिंग सेंटर के माध्यम से आधुनिक एवं उन्नत कृषि यंत्रों का उपयोग कर कृषि को लाभ का व्यवसाय बनाएं। उन्होंने कहा कि आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग से कृषि कार्य कम समय में आसानी से संपादित किए जा सकते हैं तथा नरवाई प्रबंधन में भी प्रभावी सहायता मिलती है। कलेक्टर ने किसानों से चर्चा करते हुए नरवाई जलाने की गलत प्रथा को हतोत्साहित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि सभी को मिलकर नरवाई मुक्त ग्राम की दिशा में कार्य करना चाहिए, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ भूमि की उर्वरता भी बनी रहे। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री मिश्रा ने माखननगर स्थित स्ट्रॉ सप्लाई चैन हाईटेक हब के स्ट्रॉ कलेक्शन सेंटर में चल रहे नरवाई कलेक्शन कार्यों का भी अवलोकन किया। उन्होंने संचालक श्री भूपेंद्र राजपूत से चर्चा कर नरवाई प्रबंधन की तकनीकों की जानकारी ली। संचालक द्वारा बताया गया कि बेलर मशीन के माध्यम से खेतों से नरवाई एकत्रित कर उसकी बेल्स तैयार की जाती हैं। कलेक्टर श्री मिश्रा ने निर्देश दिए कि जिले में अधिक से अधिक क्षेत्रफल को कवर करते हुए आधुनिक कृषि यंत्रों एवं बेलर मशीनों का उपयोग कर प्रभावी नरवाई प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए। निरीक्षण के दौरान कृषि अभियांत्रिकी विभाग से सहायक यंत्री श्री चंदन सिंह बरकड़े सहित अन्य अधिकारी गण एवं किसान बंधु उपस्थित रहे।

ग्राम तिरमहू में 10 वर्ष पुरानी विद्युत समस्या का हुआ समाधान

बैतूल (निप्र)। वितरण केंद्र आमला ग्रामीण अंतर्गत ग्राम तिरमहू में विद्युत विभाग द्वारा लंबे समय से चली आ रही विद्युत संबंधी समस्याओं का समाधान जनकल्याण शिविर के दौरान किया गया। विभाग द्वारा गांव में विद्युत व्यवस्था को सुरक्षित एवं सुचारू बनाने के लिए विभिन्न सुधार कार्य किए गए। ग्राम में 11 केवी लाइन के 10 तथा एलटी लाइन के 73 नए सीमेंट पोल स्थापित किए गए। साथ ही झूलती हुई एलटी लाइनों को कसकर मानक ऊंचाई पर किया गया। खेतों में स्थित दो तिरछे डीटीआर/डीपी को सीधा कर उनके स्ट्रक्चर को मजबूत बनाया गया, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना कम हुई। किसानों की व्यक्तिगत समस्याओं का भी निराकरण किया गया। श्री रघुनाथ पूरन के खेत में नीचे झूलते तारों को सुरक्षित करने के लिए 5 पोल लगाए गए। श्री मनोज ठाकरे के खेत में 11 केवी लाइन को सुरक्षित ऊंचाई पर करने के लिए 2 नए पोल स्थापित किए गए। वहीं श्री तरुण पंडाग्रे के खेत में तिरछे डीटीआर/डीपी को सीधा किया गया। पंचायत भवन एवं स्कूल मोहल्ले में नीचे झूल रही केबल को ऊंचा करने के लिए 2 मिड-स्पान पोल लगाए गए, जिससे आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित हुई। ग्राम में आयोजित शिविर के दौरान ग्रामीणों को प्रधानमंत्री सूर्यघर योजना की जानकारी दी गई तथा सौर ऊर्जा अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही बिजली बचत, विद्युत चोरी रोकथाम, विभागीय मोबाइल एप्लीकेशन के उपयोग तथा समय पर बिजली बिल जमा करने के संबंध में भी जागरूक किया गया।

मनवानी सरः अनुशासन सिखाने वाले क्रिकेट कोच

पुण्यतिथि पर विशेष

आलोक गोस्वामी
क्रिकेट विश्लेषक

प्रो. एस.एन. मनवानी यह वह नाम है जिनको सागर विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के विद्वान प्रोफेसर व पुरातात्विक विषय के जानकार के लिए तो सभी जानते हैं। लेकिन अगर हम इतिहास और खेल का समायोजन करें तो फिर सागर शहर में 1970 से 80 के दशक में अगर किसी को याद किया जाता है तो वह क्रिकेट प्रेमी और खेल की बारीक समझ रखने वाले हमारे अंकल मनवानी ही सभी को याद आते हैं। उस दौर में शायद ही कोई ऐसा खिलाड़ी रहा होगा जो उनके क्रिकेट जुनून से वाकिफ न हुआ हो।

वैसे तो सागर और उसकी क्रिकेट इतिहास में कई वह नाम हैं जिनकी चर्चा जगह जगह होती आयी है। लेकिन मेरे लिए तो एक ही वह नाम है वह है सिविल लाइन के मनवानी अंकल....जिसने मेरे बचपन वाले खेल फुटबाल के लगाव में भी क्रिकेट की प्रतिभा को देख लिया था।याद आता है हमको अपना जिला स्तरीय अंतर स्कूल फुटबाल का वह फाइनल जो सागर के पुलिस लाइन मैदान पर खेला जा रहा था। मैं उस मैच में उस वक्त का गवर्मेंट स्कूल जो वर्तमान में एक्सीलेंस स्कूल के नाम से जाना जाता है के लिए बतौर गोल कीपर मैदान में था। आज भी जहन में 1978 का वह साल और हमारे गोल के पास ही खड़े मनवानी अंकल की वह हौसला अफजाई करने की कला व फुटबॉल के मैच में भी क्रिकेट को शामिल करने का तरीका हमको याद है।शायद उनकी इसी कला की वजह से मैं उनके संपर्क में आया। मनवानी अंकल की सबसे बड़ी खूबी यही थी कि खिलाड़ी चाहे बच्चा हो या बड़ा उनकी नजर बस उसके अंदर छिपी काबलियत को उकेरने पर होती थी।इसी वजह से उस वक्त पर मेरे जैसे छोटे बच्चे को भी उन्होंने क्रिकेट में निखारने की जिम्मेदारीले डाली।सच कहें तो मेरे फुटबाल मैच में मनवानी अंकल की क्रिकेट वाली उन बातों ने मुझे इतना प्रभावित किया कि वह मैच हमारे फुटबॉल कैरियर का आखिरी मैच हो गया। शायद इसी वजह से क्रिकेट का असल गुरु हम अभी भी उनको ही मानते हैं। सच तो यह है कि हमको फुटबाल के मैदान से क्रिकेट की पिच पर उतारने वाले मनवानी अंकल ही एकमात्र मार्गदर्शक हैं।बस यहीं से अंकल ने हमको यह एहसास करवा दिया तज कि जब तुम्हारे बड़े भाई क्रिकेट में सागर के लिए खेल सकते हैं तो फिर तुम क्यों नहीं.....भले ही विश्विद्यालय के छात्रों के लिए वह प्रोफेसर मनवानी जाने जाते थे ,लेकिन चूंकि मै उस वक्त कक्षा 10 का छात्र था तो मेरा संबोधन हमेशा उनके लिए मनवानी अंकल ही रहा है। अंकल की बातों का प्रभाव का वक्त इतना हुआ कि 10 वीं क्लास में मैने पहली बार क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया।गली मोहल्ले की क्रिकेट में चूंकि हम सिविल लाइंस में ही रहते थे अक्सर अंकल क्रिकेट के मैदान में हमको प्रोत्साहित करने आ जाते थे। हम क्रिकेट के मैदान में तरह तरह के हाथ (बल्लेबाजी और गेंदबाजी) आजमाते थे। एक बार फिर उन्होंने ही मुझको क्रिकेट के खेल की अहम सलाह दे डाली। वह बोले कि तुम फुटबाल में गोल कीपर थे अब क्रिकेट में भी बतौर विकेट कीपर क्यों नहीं ट्राय करते हो। बस हमको तो उनकी यह सलाह इतनी भा गयी कि बस हमने भी ठान लिया कि अब क्रिकेट के मैदान में हम इसी किरदार को निभायेंगे। अंकल की वह सलाह या फिर हम आदेश कहें का फायदा हमको यह हुआ कि बतौर विकेट कीपर हम लगातार सागर विश्वविद्यालय और सागर संभाग की टीमों का प्रतिनिधित्व कर सके।मेरे कहने का मतलब एकदम साफ है कि मनवानी अंकल का खिलाड़ी को परखने ओर उसकी काबलियत पहचानने की पारखी नजर थी। हमको आज भी उनके वो शब्द याद हैं जब वो हमसे कहते थे विकेट की पीछे खड़ा होने वाला विकेट कीपर की नजर पूरे मैदान पर रहती है,इसलिए तुम इस भूमिका को अपनाओ।मैदान में तो हमको उनकी इस सलाह का भरपूर फायदा मिला,लेकिन मैदान के बाहर से खेलने वाली हमारी बतौर खेल विश्लेषक वाली पारी में भी कहीं न कहीं उनके आशीर्वाद की झलक हमको आज भी नजर आती है। सागर में सैकड़ों खिलाड़ियों ने उनके द्वारा लाई गई खेल सामग्री के दर्शन पहली बार किए जैसे लेदर बाल, पैड,ग्लव्स और एब्डामिन गार्ड उपयोग करने की तरफ अग्रसर हुए। वे खुद छोटा रन अप लेकर शानदार स्पिन गेंदबाजी करते थे। हमारे लिये क्रिकेट के प्रेरणा स्रोत रहे हमारे मनवानी अंकल व सबके प्रोफेसर मनवानी की आज 23वीं पुण्यतिथि पर शत-शत नमन व सादर श्रद्धांजलि।

सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने पश्चिम मध्य रेल के महाप्रबंधक से की भेंट

क्षेत्रीय रेल सुविधाओं एवं जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया

आमजन की सुविधा, सुरक्षा हमारी प्राथमिकता - सांसद दर्शन सिंह चौधरी

नर्मदापुरम (निप्र)। इटारसी रेलवे स्टेशन पर नर्मदापुरम संसदीय क्षेत्र के सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी ने पश्चिम मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री दिलीप सिंह से सौजन्य भेंट कर क्षेत्रीय रेल सुविधाओं के विस्तार तथा जनहित से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की। बैठक में क्षेत्र के नागरिकों की लंबे समय से लंबित मांगों एवं यात्री सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से रखा गया। सांसद श्री चौधरी ने हाल ही में निर्माणाधीन जुझारपुर, बनखेड़ी एवं मनकवारा पुलों के कारण आमजन को हो रही असुविधा का उल्लेख करते हुए इन पुलों पर शीघ्र आवागमन बहाल करने की मांग की। उन्होंने आग्रह किया कि पूर्ण निर्माण कार्य होने तक कम से कम एक ओर का मार्ग तत्काल प्रारंभ किया जाए, जिससे क्षेत्रवासियों को आवागमन में राहत मिल सके। बैठक में नर्मदापुरम रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा बढ़ाने के उद्देश्य से स्टेशन के दोनों ओर 24 घंटे टिकट उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित करने का विषय भी प्रमुखता से उठाया गया। सांसद श्री चौधरी ने यात्रियों को स्वच्छ एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए अधिकृत वेंडरों की पर्याप्त व्यवस्था करने तथा स्टेशन परिसर में सुरक्षा एवं अन्य बुनियादी सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ बनाने का आग्रह किया। क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास से जुड़े विषयों पर चर्चा करते हुए सांसद श्री चौधरी ने सोहागपुर रेलवे स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन योजना में शामिल करने की मांग रखी, जिससे स्टेशन का आधुनिकीकरण एवं यात्री सुविधाओं का विस्तार हो सके। इसके अतिरिक्त उन्होंने बागरा में रैक प्वाइंट स्थापित करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि इससे क्षेत्र के व्यापार, कृषि एवं औद्योगिक गतिविधियों को गति मिलेगी। साथ ही रेलवे के खेल मैदान को विकसित कर युवाओं के लिए खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने का भी प्रस्ताव रखा। पश्चिम मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री दिलीप सिंह ने सांसद द्वारा उठाए गए सभी विषयों पर सकारात्मक विचार करते हुए आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि जनहित एवं यात्री सुविधाओं से जुड़े विषयों को प्राथमिकता के आधार पर परीक्षण कर उचित निर्णय लिया जाएगा। सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी ने कहा कि नर्मदापुरम संसदीय क्षेत्र के विकास तथा नागरिकों को बेहतर रेल सुविधाएं उपलब्ध कराना उनकी प्राथमिकता है। क्षेत्र में रेलवे अवसंरचना के विकास, यात्री सुविधाओं के विस्तार एवं जनसुविधाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु वे लगातार प्रयासरत हैं और आगे भी जनहित के मुद्दों को मजबूती से उठाते रहेंगे। इस अवसर पर पश्चिम मध्य रेल के डीआरएम श्री पंकज त्यागी, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार मंडल, प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री अरविंद कुमार रजक, प्रमुख सुरक्षा आयुक्त श्री राजीव कुमार यादव, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सौरभ कटारिया, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री रोहित मालवीय, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) श्री रामेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त डॉ. अभिषेक सहित रेलवे मुख्यालय एवं मंडल के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही जेडआरयूसीसी सदस्य श्री योगेंद्र सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष श्री पंकज चौरे एवं जनपद अध्यक्ष श्री भूपेंद्र चौकसे भी बैठक में मौजूद रहे।

मलेरिया जनजागरूकता रथ पहुंचा गांव-गांव, ग्रामीणों को किया जागरूक

विदिशा (निप्र)। मलेरिया उन्मूलन एवं जनस्वास्थ्य सुरक्षा के उद्देश्य से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नटेरन द्वारा संचालित मलेरिया जनजागरूकता रथ लगातार ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण कर लोगों को जागरूक कर रहा है। इसी क्रम में मंगलवार, 16 जून को जनजागरूकता रथ ने देवखजूरी, कागपुर, हिनोतिया, सेउ एवं पमारिया चौराहा सहित विभिन्न गांवों का भ्रमण कर ग्रामीणों को मलेरिया से बचाव संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों द्वारा ग्रामीणों को बताया गया कि मलेरिया एक गंभीर संक्रामक बीमारी है, जो संक्रमित मादा एनोफेलीज मच्छर के काटने से फैलती है। समय पर पहचान और उपचार से इस बीमारी पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। जागरूकता रथ के माध्यम से लोगों को अपने घरों और आसपास के क्षेत्रों में साफ-सफाई बनाए रखने, जलभराव रोकने तथा मच्छरों के प्रजनन स्थलों को नष्ट करने के लिए प्रेरित किया गया।

स्वास्थ्य अधिकारियों ने ग्रामीणों को सलाह दी कि वे रात में सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें, घरों के आसपास पानी जमा न होने दें तथा बुखार आने पर तुरंत स्वास्थ्य केंद्र में जांच कराएं। अभियान के दौरान लोगों को यह भी बताया गया कि मलेरिया की जांच और उपचार की सुविधा शासन द्वारा निशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है।

विभाग द्वारा जानकारी दी गई कि क्षेत्र के सभी स्वास्थ्य केंद्रों एवं आशा कार्यकर्ताओं के पास मलेरिया जांच की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है। किसी भी व्यक्ति को बुखार, ठंड लगना, सिरदर्द या शरीर में दर्द जैसे लक्षण दिखाई देने पर तत्काल जांच करानी चाहिए, ताकि समय रहते उपचार शुरू किया जा सके।

28 से 30 जून तक चलने वाले पल्स पोलियो अभियान की जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक आयोजित

शत-प्रतिशत बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभाकक्ष में आगामी 28 से 30 जून तक जिले में चलने वाले वाले पल्स पोलियो अभियान की तैयारियों के लिए जिला स्तरीय टास्क फोर्स समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को अभियान के सफल संचालन के लिए माइक्रो स्तर पर विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि 0 से 5 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों तक पहुंच सुनिश्चित करते हुए उन्हें पोलियो की खुराक पिलाई जाए। अभियान के दौरान कोई भी बच्चा पोलियो की दवा से वंचित न रहे, इसके लिए घर-घर संपर्क, विशेष टीमों का गठन और संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए। कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा स्कूल शिक्षा विभाग को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए पल्स पोलियो अभियान को सफल बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग अपने स्तर पर जिम्मेदारियां तय कर अभियान को शत-प्रतिशत सफल बनाने में सहयोग करें। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से कहा कि अभियान के लिए आवश्यक मानव संसाधन, दवाओं की उपलब्धता, प्रशिक्षण एवं निगरानी की सभी व्यवस्थाएं समय पर पूर्ण कर ली जाएं। साथ ही जनप्रतिनिधियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय नागरिकों के सहयोग से अभियान को प्रभावी बनाया जाए।

जिला प्रबंधक लोक सेवा द्वारा लोक सेवा केंद्रों का निरीक्षण

व्यवस्थाओं में सुधार हेतु दिए निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के निर्देशानुसार सुशासन के अंतर्गत जिले में आमजन को सुलभ, सरल एवं पारदर्शी तरीके से सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कलेक्टर के निर्देशानुसार जिला लोक सेवा प्रबंधन श्री आनंद झेरवार द्वारा सोमवार को लोक सेवा केंद्र सिवनी मालवा एवं लोक सेवा केंद्र डोलरिया का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान श्री झेरवार ने दोनों केंद्रों की व्यवस्थाओं, प्राप्त आवेदनों, अभिलेखों एवं ऑनलाइन सेवाओं की समीक्षा की तथा आवश्यक सुधारात्मक निर्देश दिए। लोक सेवा केंद्र सिवनी मालवा के निरीक्षण में कुछ आवेदनों में अपूर्ण प्रिंट एवं ऑनलाइन प्रिंट पर आवेदकों के हस्ताक्षर नहीं पाए गए।

इस पर ऑपरेटरों को निर्देशित किया गया कि सभी ऑनलाइन भरे गए आवेदनों के पूर्ण प्रिंट आउट निकालकर आवेदकों के अनिवार्य रूप से हस्ताक्षर लिए जाएं तथा शत-प्रतिशत ऑनलाइन प्रविष्टि सुनिश्चित की जाए। केंद्र एवं शौचालय की साफ-सफाई बेहतर बनाए रखने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान एक ऑपरेटर यूनिफॉर्म में उपस्थित नहीं पाया गया, जिसे समयपालन एवं निर्धारित यूनिफॉर्म में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए।

उपस्थिति रजिस्टर अधूरा पाए जाने पर उसे नियमित रूप से संधारित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही प्रत्येक आवेदन की पावती आवेदक को अनिवार्य रूप से प्रदान करने तथा सभी आवेदन अगले दिवस तक संबंधित कार्यालयों में प्रेषित किए जाने के निर्देश दिए गए। CCTV कैमरों की रिकॉर्डिंग सुरक्षित रखने एवं आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध कराने हेतु भी निर्देशित किया गया।

लोक सेवा केंद्र डोलरिया के निरीक्षण में सेवावार संधारित रजिस्टरों एवं आवेदनों की जांच की गई। यहां भी कुछ ऑनलाइन आवेदनों पर आवेदकों के हस्ताक्षर नहीं पाए गए, जिस पर संबंधित ऑपरेटरों को आवश्यक निर्देश दिए गए।

आवेदन की हार्डकॉपी अगले दिवस तक संबंधित कार्यालयों में भेजने, ऑनलाइन आवेदन एवं पावती की स्पष्ट एवं साफ प्रिंटिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान CCTV कैमरे बंद पाए गए, जिन्हें प्राथमिकता से दो दिवस के भीतर सुधारने के निर्देश दिए गए। केंद्र परिसर में साफ-सफाई बनाए रखने के निर्देश भी दिए गए। दोनों लोक सेवा केंद्रों पर सभी ऑपरेटरों को निर्धारित यूनिफॉर्म में उपस्थित रहने एवं समयपालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही सेवाओं की सूची एवं आवेदन शुल्क संबंधी जानकारी प्रदर्शित करने तथा प्रत्येक आवेदन की पावती आवेदक को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराने हेतु निर्देशित किया गया। ऑपरेटरों को आवेदकों के प्रति विनम्र एवं शालीन व्यवहार बनाए रखने की समझाइश भी दी गई।

जिला प्रबंधक द्वारा सभी केंद्रों पर निर्धारित स्टाफ, पेयजल व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, इंटरनेट, कंप्यूटर, प्रिंटर, यूपीएस, फर्नीचर एवं प्रचार-प्रसार सामग्री की उपलब्धता एवं सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए।

क्षतिग्रस्त भवनों में कक्षाएं संचालित न करें: सहायक संचालक

सिवनीमालवा में शैक्षणिक सत्र 2026-27 की समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। नवीन शैक्षणिक सत्र 2026-27 शुरू होने से पहले शिक्षा विभाग की विभागीय समीक्षा बैठक शासकीय सांदीपनि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिवनीमालवा में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सहायक संचालक शिक्षा योगेश मनोहरे ने की। बैठक की शुरुआत सांदीपनि स्कूल के प्राचार्य ए.एस. राजपूत के निधन पर 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि देकर की गई। कार्यक्रम का संचालन नवीन हाई स्कूल के प्राचार्य सुरेंद्र कुमार पाटिल ने किया। बैठक में श्री मनोहरे ने निर्देश दिए कि किसी भी छात्र-छात्रा को प्रवेश से वंचित न किया जाए। निशुल्क साइकिल योजना के पात्र छात्राओं की सूची पहले से तैयार की जाए। निशुल्क

पाठ्यपुस्तक वितरण 23 जून 2026 तक पूर्ण करना सुनिश्चित करें। क्षतिग्रस्त शाला भवनों में कक्षाएं संचालित न की जाएं। संकुल प्राचार्य इसका गंभीरता से निरीक्षण करें। ई-अटेंडेंस के आधार पर ही वेतन भुगतान होगा। अतिथि शिक्षकों का अनुभव प्रमाण पत्र संकुल स्तर से जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को भेजना अनिवार्य है। कार्यालय प्रकरण, समयमान वेतनमान, ग्रेडेशन लिस्ट में 7 दिन के भीतर प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला व नव नियुक्त शिक्षकों के नाम जोड़े जाएं। कक्षा 9वीं और 11वीं का द्वितीय परीक्षा परिणाम 23 जून 2026 तक घोषित किया जाए। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को प्राथमिकता दी जाए। उच्च परीक्षा की अनुमति के लिए नए फॉर्मेट में आवेदन कार्यालय में जमा करें। 21 जून 2026 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शाला स्तर पर तैयारी करें। नव नियुक्त शिक्षकों की गोपनीय चरित्रावली वेतन भुगतान दिनांक से तथा क्रमोन्नति/पदोन्नति पदभार ग्रहण दिनांक से दी जाए। संविलियन के लिए 3 वर्ष पूर्ण होना आवश्यक है बैठक में छात्रवृत्ति और MP Task 2023 से 2026 तक की प्रगति पर भी चर्चा हुई।

जन अभियान परिषद ने जलोदा की प्राचीन बावड़ी की साफ सफाई कर मनाया 'बावड़ी उत्सव'

हरदा (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार विकासखंड टिमरनी मे म. प्र. जन अभियान परिषद के माध्यम से जनसहभागिता से जल स्रोतों की साफ - सफाई, गहरीकरण, जलसंरक्षण के लिए जनजागरूकता एवं जल स्त्रोत पूजन एवं गंगा कलश यात्राओं के वृहद स्तर पर आयोजन किये गये। इसी क्रम में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत तृतीय चरण में 'बावड़ी उत्सव' कार्यक्रम के तहत टिमरनी विकासखण्ड के ग्राम जलोदा में सोमवार को सोमवती अमावस्या के अवसर पर स्वच्छता, साफ - सफाई, बावड़ी पूजन एवं जल संगोष्ठी का आयोजन कल आयोजन किया गया। इस अवसर पर जलोदा ग्राम में स्थित लगभग 300 वर्ष पूरानी बावड़ी की साफ - सफाई व पुताई कर बावड़ी का पूजन अर्चन किया गया। साथ ही ग्रामवासियों, माताओं, बहनों, युवाओं एवं बच्चों के साथ सम्पूर्ण बावड़ी में दीप प्रज्जवलित किये गये। इसके बाद ग्राम के स्कूल परिसर में स्थित बावड़ी पर जल संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के जिला समन्यक श्री संदीप गोहर, सरपंच श्री तेजाराम जी, वरिष्ठ कवि साहित्यकार एवं मेंटर श्री मुकेश शांडिल्य, विकासखंड समन्वयक श्री अनुपम भारद्वाज, शिक्षक श्री जयेंद्र राजपूत, श्री रतिराम बाबा समाधी से श्री तरुण महंत, नवांकुर संस्था पहल से श्री अमित माहुले, सुश्री नेहा राठौर व अन्य ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में प्राचीन श्री वीरगढ़ी हनुमान मंदिर की गोशाला में गोमाता की पूजा कर गुड़-चारा खिलाया।

मप्र के 81 लाख किसानों को 1,634 करोड़ मिलेंगे

शिवराज सिंह ने की घोषणा, मीनाक्षी नटराजन पर बोले- अब पछताए होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में बताया- 20 जून को पीएम किसान की 23वीं किस्त आएगी। पीएम नरेंद्र मोदी पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के तारकेश्वर से 23वीं किस्त जारी करेंगे। साथ ही बताया- मध्यप्रदेश के 81.67 किसानों के खातों में 1,634 करोड़ रुपए से अधिक की राशि सीधे ट्रांसफर की जाएगी।

उन्होंने कहा- खरीफ सीजन की शुरुआत से पहले मिलने वाली यह सहायता किसानों के लिए बड़ी राहत होगी। वहीं मीनाक्षी नटराजन के सत्याग्रह को लेकर पूछे गए सवाल पर शिवराज सिंह ने कहा- अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

शिवराज सिंह चौहान ने बताया- पीएम-किसान योजना के तहत अब तक 22 किस्तों के माध्यम से देशभर के किसानों के खातों में करीब 4.28 लाख करोड़ रुपए सीधे भेजे जा चुके हैं। 23वीं किस्त के तहत देश के करीब 9 करोड़ किसानों के खातों में 18,800 करोड़ रुपए से अधिक की राशि ट्रांसफर की जाएगी। शिवराज सिंह चौहान ने बताया- 20 जून को पीएम किसान सम्मान निधि की 23वीं किस्त जारी होगी।

देशभर में मनाया जाएगा पीएम किसान उत्सव दिवस

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि 23वीं किस्त जारी होने के अवसर पर पूरे देश में पीएम किसान उत्सव दिवस मनाया जाएगा। इसके तहत देश के 731 कृषि विज्ञान केंद्रों, 113 आईसीएआर संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों और राज्य, जिला, ब्लॉक तथा ग्राम पंचायत स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। अनुमान है कि करीब 4 करोड़ किसान विभिन्न स्थानों से इन कार्यक्रमों में शामिल होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संबोधन सुनेंगे।

एमएसपी पर दलहन खरीदी को लेकर जल्द फैसला

केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार ने पीएम-आशा योजना के तहत उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और गुजरात को मूंग, उड़द और मसूर की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर करने की अनुमति दे दी है। मध्यप्रदेश के संबंध में राज्य सरकार के साथ चर्चा जारी है और शुक्रवार को होने वाली बैठक के बाद इस पर फैसला लिया जाएगा।

अल नीनो और मानसून पर केंद्र की नजर

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मानसून में देरी और अल नीनो के संभावित प्रभाव को देखते हुए केंद्र सरकार लगातार हालात की समीक्षा कर रही है। विभिन्न विभागों के साथ नियमित बैठकें की जा रही हैं ताकि किसी भी संभावित संकट से पहले तैयारी पूरी की जा सके।

उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश के 16 जिलों में अल नीनो के प्रभाव की संभावना को देखते हुए विशेष कंटीजेंसी प्लान तैयार किया जा रहा है। प्रभावित क्षेत्रों के लिए कम पानी वाली फसलों, वैकल्पिक खेती और बेहतर बीज उपलब्ध कराने की रणनीति बनाई जा रही है।

पश्चिम बंगाल के किसानों को भी मिलेगा लाभ

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि पहले पश्चिम बंगाल के किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि योजना का पूरा लाभ नहीं मिल पाता था, लेकिन अब राज्य के 44 लाख 42 हजार किसानों को भी योजना का लाभ मिलेगा। इससे वहां के छोटे और सीमांत किसानों को आर्थिक सहायता मिलेगी।

कम बारिश की स्थिति के लिए भी तैयारी

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यदि बारिश में लंबा अंतराल आता है या सामान्य से कम वर्षा होती है, तो किसानों को वैकल्पिक खेती के विकल्प उपलब्ध कराए जाएंगे। केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर जिला स्तर पर रणनीति तैयार कर रही हैं ताकि किसानों को नुकसान से बचाया जा सके।

पराली प्रबंधन पर राज्यों को सलाह

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि पराली प्रबंधन को लेकर भी राज्यों को पहले से जरूरी कदम उठाने की सलाह दी गई है। विशेष रूप से धान उत्पादक राज्यों के साथ फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर समन्वय किया जा रहा है, ताकि पर्यावरण और कृषि दोनों को होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

आज से शिक्षकों के ट्रांसफर, ऑनलाइन कर सकेंगे आवेदन

ई-अटेंडेंस, जनगणना ड्यूटी बनी बाधा; शिक्षक बोले- नियम बदले बिना ट्रांसफर नामुमकिन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के स्कूल शिक्षा विभाग में मनचाहे ट्रांसफर (स्वैच्छिक स्थानांतरण) का इंतजार कर रहे शिक्षकों के लिए बड़ी खबर है। विभाग 19 जून से ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू करने जा रहा है। हालांकि, तबादले की नई शर्तों और नियमों को लेकर प्रदेश के शिक्षकों में असंतोष बढ़ता जा रहा है। शिक्षक संगठनों का साफ कहना है कि नियम इतने कड़े हैं कि अधिकांश शिक्षक इसका लाभ ही नहीं उठा पाएंगे। शिक्षक संगठन के अनुसार, स्वैच्छिक तबादले के लिए पोर्टल बहुत कम समय के लिए खोला जा रहा है। आवेदन की आखिरी तारीख 23 जून है।

इन 3 शर्तों ने बढ़ाई परेशानी, 95 प्रतिशत शिक्षक हो सकते हैं बाहर- शासकीय शिक्षक संगठन मध्य प्रदेश के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष उपेन्द्र कौशल का दावा है कि वर्तमान परिस्थितियों में प्रदेश के करीब 95 प्रतिशत शिक्षक आवेदन करने से ही वंचित रह जाएंगे। इसके पीछे मुख्य रूप से तीन कड़े नियम हैं।

90 प्रतिशत ई-अटेंडेंस की अनिवार्यता- विभाग ने ट्रांसफर के लिए 90 प्रतिशत ऑनलाइन हाजिरी अनिवार्य की है। शिक्षकों का कहना है कि तकनीकी समस्याओं और नेटवर्क न होने के कारण कई बार उपस्थिति दर्ज नहीं हो पाई, जिसका खामियाजा अब उन्हें भुगतना पड़ रहा है।

जनगणना ड्यूटी पर रोक- प्रदेश के करीब 75 प्रतिशत शिक्षक इस समय जनगणना कार्य में लगे हुए हैं। नए नियमों के मुताबिक, जनगणना ड्यूटी वाले शिक्षकों के ट्रांसफर नहीं होंगे। यहां तक कि अगर किसी का प्रशासनिक ट्रांसफर आदेश पहले जारी भी हो चुका है तो ड्यूटी के कारण उसे स्वतः निरस्त माना जाएगा।

3 साल की न्यूनतम सेवा- जिन शिक्षकों को सेवा में अभी 3 साल पूरे नहीं हुए हैं, वे भी इस प्रक्रिया से बाहर हैं।

4.25 लाख शिक्षकों का मामला, सरकार से पुनर्विचार की मांग- पारिवारिक, स्वास्थ्य और अन्य व्यक्तिगत कारणों से लंबे समय से अपने घर या पसंदीदा क्षेत्र में ट्रांसफर की राह देख रहे हजारों शिक्षक इन नियमों से हताश हैं।

शासकीय शिक्षक संगठन ने राज्य सरकार और स्कूल शिक्षा विभाग से मांग की है कि व्यावहारिक समस्याओं को देखते हुए ई-अटेंडेंस, जनगणना ड्यूटी और 3 साल की सेवा अवधि की शर्तों में ढील दी जाए, ताकि वर्षों से परेशान शिक्षकों को सही मायने में राहत मिल सके।

'कबूल है... कबूल है'

तड़पती-चीखती एयरफोर्स जवान की पत्नी का जबरन मौलाना ने करवाया धर्मांतरण, छिंदवाड़ा से गिरफ्तार

छिंदवाड़ा (नप्र)। जबरन धर्मांतरण और रेप के मामले में फरार चल रहे मौलाना को नागपुर पुलिस ने कथित रूप से छिंदवाड़ा से गिरफ्तार कर लिया है। हालांकि यह भी कहा जा रहा है कि पुलिस की दबिश की वजह से उसने सरेंडर कर दिया है। मौलाना हजरत मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा का रहने वाला है। तामिया क्षेत्र में उसका घर है। बुधवार देर रात उसने सोनेगांव पुलिस थाने में सरेंडर किया है।

मौलना हजरत की तलाश में थी कई टीमें- दरअसल, मौलना हजरत की तलाश में पुलिस की कई टीमें थी। तमिया स्थित उसके घर के आसपास भी पुलिस की टीम की टीम तलाश कर रही थी। नागपुर पुलिस के बढ़ते दबाव की वजह से उसे छिपना मुश्किल हो रहा था। इसके बाद उसने सरेंडर किया है। लेकिन स्थानीय सूत्रों के अनुसार उसे गिरफ्तार किया गया है

जबरन धर्मांतरण और निकाह का आरोप- मौलना हजरत ने एयरफोर्स कर्मी की पत्नी के साथ ज्यादती की थी। आरोपी पर 24 वर्षीय महिला केजबरन धर्मांतरण में मदद करने और उसका निकाह कराने का आरोप है। महिला एयरफोर्स कर्मी की पत्नी है।

दो पहले हो चुके हैं गिरफ्तार

वहीं, इस मामले में मुख्य आरोपी अयाज ताज मदारे और आरोपी आमिर मेहमूद शेख को पुलिस ने पहले ही गिरफ्तार कर लिया है। मौलाना हजरत को पुलिस ने कोर्ट में पेश किया है और रिमांड की मांग की है। रिमांड के दौरान उससे पूछताछ की जाएगी। साथ ही घटना के बारे में समझा जाएगा।

21 जून तक की है पुलिस रिमांड

इसके साथ ही दो अन्य आरोपियों की पुलिस रिमांड 21 जून तक बढ़ा दी गई है। जांच टीम मोबाइल फोन, सिम कार्ड, सोशल मीडिया अकाउंट और अन्य डिजिटल साक्ष्यों की फॉरेंसिक जांच कर रही है।

आपत्तिजनक वीडियो की भी जांच

नागपुर पुलिस यह भी जांच कर रही है कि महिला के साथ कथित रूप से कब जबरन वसूली हुई। आपत्तिजनक वीडियो का प्रसार कब हुआ और साथ ही नशीला पदार्थ कब दिया गया है। आरोप है कि दो अन्य आरोपी महिला को 31 मई को कमलेश्वर लेकर आए थे। मौलाना हजरत यही था। उसी ने महिला का धर्मांतरण करवाया था। उसने कहा था कि कबूल है बोलो। इसके बाद मौलाना ने कहा था कि यह मुस्लिम बन गई है। अयाज के साथ निकाह हो गया है।

पति से छिपाती रही पूरी बात

पुलिस जांच में सामने आया है कि महिला ने लंबे समय तक यह पूरा मामला अपने पति से छिपाकर रखा। उसके पति भारतीय वायुसेना में हैं और वर्तमान में दूसरे शहर में पदस्थ हैं। महिला के अनुसार, जब आरोपियों की ओर से लगातार धमकी भरे फोन आने लगे और मामला बढ़ता गया।

काला जादू भी किया

एफआईआर में महिला ने दावा किया है कि आरोपी उसे मध्य प्रदेश के तामिया क्षेत्र में लेकर गए, जहां मौलाना हजरत ने कथित तौर पर तांत्रिक अनुष्ठान और काला जादू जैसी गतिविधियां कीं। महिला का कहना है कि उसे मानसिक रूप से प्रभावित करने का प्रयास किया गया और इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए दबाव बनाया गया। लगातार दबाव और भय के माहौल में उसे अय्याज से निकाह करने के लिए भी मजबूर किया गया। उसने आरोप लगाया कि मौलाना की बातों और धार्मिक दबाव के कारण वह कुछ समय के लिए आरोपियों के प्रभाव में आ गई थी।

मध्य प्रदेश के स्कूलों में दूसरे चरण का प्रवेशोत्सव शुरू

बच्चों का बन गया दिन! स्कूल के फर्स्ट डे ही क्लास में सीएम मोहन यादव से हो गया सामना, मिला खूब प्यार

इंदौर (नप्र)। गर्मी की छुट्टी के बाद एमपी में सरकारी और गैर सरकारी स्कूल खुल गए हैं। स्कूल के पहले ही दिन इंदौर में बच्चों का दिन बन गया है। उनके क्लास में सीएम मोहन यादव पहुंच गए। उन्होंने छात्रों पर खूब प्यार और दुलार लुटाया है। साथ ही छात्रों से बात भी की है।

शासकीय स्कूल में पहुंच गए सीएम

मध्यप्रदेश के स्कूलों में 18 जून से चहल-पहल बढ़ गई। राज्य के स्कूलों में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम का दूसरा चरण आयोजित किया गया। इस मौके पर मध्यप्रदेश के सीएम मोहन यादव इंदौर के शासकीय शारदा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पहुंचे। उन्होंने छात्राओं से संवाद भी किया। साथ ही स्कूल की प्रयोगशाला का अवलोकन किया और शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ली।

नामांकन में दर्ज हुई वृद्धि

गौरतलब है कि प्रवेशोत्सव कार्यक्रम का पहला चरण 1 से 4 अप्रैल तक आयोजित किया गया था। उस वक्त भी मोहन यादव ने शासकीय स्कूलों में ड्रॉप आउट की संख्या शून्य करने पर स्कूल शिक्षा विभाग को बधाई दी थी। राज्य सरकार ने शासकीय स्कूलों में कक्षा 1, 6 और 9 में प्रवेश प्रक्रिया को सरल बनाया गया है। इससे वर्ष 2025-26 में नामांकन में 19.6 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई। प्रदेश के शासकीय विद्यालयों में भी 32.4 प्रतिशत की प्रगति दर्ज की गई है। राज्य सरकार ने मौजूदा सत्र में स्कूलों में 1 करोड़ 45 लाख नामांकन करने का लक्ष्य रखा है। प्रदेश में 369 भव्य सांदीपनि विद्यालयों की शुरुआत की गई।

मोहन का मनमोहन अंदाज

सीएम यादव जब अचानक छात्राओं के बीच पहुंचे तो वे यकीन ही नहीं कर सकीं। एक तरफ सीएम यादव ने उनसे कई तरह के सवाल किए, तो दूसरी तरफ छात्राओं ने भी उनसे प्रश्न पूछ लिए। छात्राओं ने उनके हर सवाल का जवाब दिया। उनके जवाबों से प्रदेश के मुखिया संतुष्ट नजर आए। सीएम यादव ने छात्राओं से दुलार भी किया और उनके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद भी दिया। साथ ने छात्राओं से विज्ञान को लेकर भी चर्चा की। छात्राओं ने लैब में उन्हें कई तरह की जानकारी दी।

मानसून सिर पर...भोपाल में इंतजाम नहीं

ज्योति टॉकीज के पास 1 साल से धंसी सड़क ठीक नहीं; अब घुटनों तक भर रहा पानी

भोपाल (नप्र)। एमपी नगर में 1 साल पहले धंसी सड़क ठीक नहीं हुई है। ऐसे में न सिर्फ एक तरफ की लेन से ट्रैफिक बंद है, बल्कि थोड़ी सी बारिश होते ही घुटनों तक पानी भी भर रहा है।

मानसून सिर पर है, लेकिन राजधानी भोपाल में अव्यवस्थाओं से निपटने के इंतजाम नहीं हुए हैं। सबसे व्यस्त इलाकों में से एक एमपी नगर में 1 साल पहले धंसी सड़क ठीक नहीं हुई है। ऐसे में न सिर्फ एक तरफ की लेन से ट्रैफिक बंद है, बल्कि थोड़ी सी बारिश होते ही घुटनों तक पानी भी भर रहा है।

बता दें कि बोर्ड ऑफिस चौराहे से एमपी नगर चौराहे के बीच की सड़क पिछले साल 17 जुलाई को धंस गई थी। यह नाले के ऊपर बनी थी। इसे अगले दो से तीन दिन में ठीक किया गया तो अगले हिस्से की सड़क धंसने लगी।

इसके चलते पीडब्ल्यूडी ने 50 साल पुराने इस नाले पर प्री-कास्ट तकनीक से रेलवे के अंडरपास जैसा स्ट्रक्चर बनाना शुरू किया। इसके लिए दो बार टेंडर भी निकाले, लेकिन ऐसा स्ट्रक्चर बनाने के लिए कोई नहीं आया और टेंडर कैंसिल हो गए। आखिरकार तीसरी बार टेंडर की प्रक्रिया हुई और फिर इसकी मरम्मत का काम शुरू हो गया।

चार महीने से चल रहा काम

ज्योति टॉकीज चौराहा से बोर्ड ऑफिस चौराहा आने-जाने वाले वाहन चालकों को पिछले चार महीने से भारी परेशानी से गुजरना पड़ रहा है। पहले एक लेन का काम शुरू किया गया, जो कुछ दिन में ही पूरा हुआ है। अब दूसरी लेन पर काम चल रहा है। इस वजह से ऐसा तरफ की सड़क बंद की गई है। ऐसे में चेतक ब्रिज से बोर्ड ऑफिस चौराहे पर आने वाले लोगों को घूमकर जाना पड़ रहा है। हर रोज करीब 5 लाख लोग परेशान हो रहे हैं।

बारिश में ज्यादा दिक्कतें

जानकारी के अनुसार, ज्योति टॉकीज चौराहे पर जो सड़क धंसी थी, उसके ऊपर बारिश के दिनों में घुटने तक पानी भर जाता था। ऐसे में राहगीर खासे परेशान होते थे। यही कारण है कि सड़क धंसने के बाद पीडब्ल्यूडी ने नई तकनीक से मरम्मत शुरू कराई, लेकिन यह भी कारगार साबित नहीं हो पाई है। हाल ही में हुई बारिश की वजह से एक लेन पर इतना पानी भर गया कि पैदल चलने वालों के लिए मुश्किलें खड़ी हो गईं। वहीं, कारें भी मुश्किल से निकल पाईं। करीब दो घंटे तक लोग परेशान होते रहे। समझा जा सकता है कि नई तकनीक भी यहां काम की नहीं रही।

भोपाल, इंदौर, धार समेत 32 जिलों में आंधी-बारिश

अशोकनगर और सागर में 56 किलोमीटर की रफ्तार से चली धूल भरी आंधी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में प्री-मानसून गतिविधियां लगातार बनी हुई हैं। गुरुवार को धार जिले के पीथमपुर में तेज बारिश हुई। 24 घंटे के दौरान 32 जिलों में आंधी और बारिश दर्ज की गई। कई इलाकों में तेज हवाएं चलीं, जबकि विदिशा, बुरहानपुर और श्योपुर में धूल भरी आंधी का असर देखने को मिला।

मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, विदिशा, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, ग्वालियर, गुना, शिवपुरी, दतिया, अशोकनगर, नीमच, उज्जैन, आगर-मालवा, शाजापुर, श्योपुर, बड़वानी, इंदौर, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, डिंडौरी, जबलपुर, कटनी, उमरिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर और सागर समेत 32 जिलों में बारिश और आंधी का दौर रहा।

तेज हवाओं की बात करें तो अशोक नगर में सबसे अधिक 56 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार दर्ज की गई। इसके बाद सागर में 54 किमी प्रतिघंटा, राजगढ़ और आगर-मालवा में 50 किमी प्रतिघंटा, इंदौर में 46 किमी प्रतिघंटा तथा बैतूल, सीहोर और शिवपुरी में 44 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से हवाएं चलीं।

इसके अलावा जबलपुर में 41 किमी प्रतिघंटा, भोपाल में 39 किमी प्रतिघंटा, विदिशा और बड़वानी में 35 किमी प्रतिघंटा, धार, गुना और नर्मदापुरम में 33 किमी प्रतिघंटा, जबकि मंदसौर, उज्जैन, ग्वालियर, खंडवा, सतना, सीधी समेत अन्य जिलों में 30 से 31 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से हवाएं दर्ज की गईं।

इन जिलों में सबसे कम बारिश- आलीराजपुर में बारिश रिकॉर्ड नहीं की गई है। इसलिए यहां बारिश का आंकड़ा जीरो है। बालाघाट, दमोह, कटनी, मैहर, रीवा, शहडोल, टीकमगढ़, बड़वानी, भिंड, दतिया, धार और खरगोन में 12.5 मिमी यानी, आधा इंच से कम पानी गिरा है। प्रदेश में एक मात्र भोपाल ही ऐसा जिला है, जहां औसत 91.9 मिमी यानी, साढ़े 3 इंच से ज्यादा बारिश हुई है। आगर-मालवा, बुरहानपुर, देवास, गुना, हरदा, इंदौर, मंदसौर, नर्मदापुरम, नीमच, रायसेन, रतलाम, सीहोर, शाजापुर, श्योपुर, शिवपुरी, विदिशा, डिंडौरी, सतना और सीधी में 1 से ढाई इंच तक बारिश हुई है। हालांकि, इतनी बारिश भी बोवनी के लिए पर्याप्त नहीं बताई जा रही है।